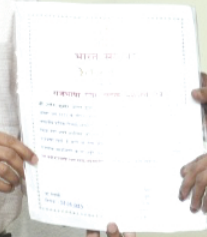


75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



मेट्रो चेतना

अंक 32



मेट्रो रेलवे, कोलकाता

मेट्रो चेतना

अंक-32

संरक्षक

पी. उदय कुमार रेड्डी

परामर्शदाता

सतीश कुमार

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर

संपादक

किरण बोस

राजभाषा अधिकारी

सहयोग

कीर्ति किरण बागे, व.अनुवाद अधिकारी
राजेश एक्का, व.अनुवाद अधिकारी
शांतनु नाथ, कनिष्ठ अनुवादक
मानसिंह मेलगंडी, नि.स.-॥

सम्पर्क

राजभाषा अनुभाग
मेट्रो रेलवे
मेट्रो रेल भवन (नवम तल)
33/1, जवाहर लाल नेहरू रोड
कोलकाता - 700 071
(020) 55735, 55037 (रेलवे)
(033) 225 55735, 225 55037 (पी. एंड टी.)
ई-मेल- rajbhashametro@gmail.com

केवल निःशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित पत्रिका। इसमें प्रकाशित
रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक/रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेवार नहीं है

अनुक्रमणिका

➤ महाप्रबंधक का संदेश	1
➤ मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश	2
➤ सम्पादकीय	2
➤ मेट्रो समाचार	3-4, 33-35
➤ नीलोफर-एक एहसास	रूपा भट्टाचार्य 5-7
➤ आओ पेड़ लगाएं	अलका सिंह 8
➤ जिंदगी	किरण बोस 9
➤ कह मुकरियाँ	संगीता कुमार 10-12
➤ अखबार की आत्मकथा	सुकन्या भट्टाचार्य 12
➤ संज्ञानात्मक असंगति	रत्ना गर्ग 13
➤ पर्यावरण और हम	सागरिका बोस 14-15
➤ माँ वैष्णव देवी दर्शन यात्रा	राजेश कुमार राम 16-17
➤ हिमालय की वादियों में एक दिन	राजेश एक्का 18-20
➤ जीवन की जीवनी	शांतनु नाथ 21-22
➤ कांचीपुरम मन्दिरों का शहर	दिलीप कुमार दास 23-25
➤ अंतरमणि	सौमेन होड़ 26
➤ अंधेरी कोठरी	रंजीत कुमार सिन्हा 26-27
➤ किसान	पेड्डा ममता राव 28-30
➤ चंद्रमा पर मेरा भारत	राजा राम महतो 31-32
➤ हिन्दी के हस्ताक्षर	36
➤ नहीं कूची	37



आवरण पृष्ठ

मेट्रो रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान महाप्रबंधक श्री पी.उदय कुमार रेड्डी राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए श्री राजेश कुमार, प्रधान संरक्षा अधिकारी को रेलवे बोर्ड द्वारा प्रदत्त रजत पदक एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करते हुए।

मेट्रो रेलवे, कोलकाता

पी.उदय कुमार रेड्डी
महाप्रबंधक



महाप्रबंधक कार्यालय
मेट्रो रेल भवन,
33/1, ज.ला.नेहरू रोड
कोलकाता-700071

महाप्रबंधक का संदेश



राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अधिकारियों व कर्मचारियों को राजभाषा विषयक आदेशों, अधिनियमों एवं नियमों का सम्यक ज्ञान आवश्यक है। यह भी जरूरी है कि वे राजभाषा के विभिन्न पहलुओं से भली-भांति परिचित हों, उनकी बारीकियों को समझें व दूसरे को भी समझा सकें।

चूंकि हमारा कार्यालय राजभाषा की दृष्टि से 'ग' क्षेत्र में पड़ता है जहां बांग्ला भाषा एवं संस्कृति की बहुलता है। इसलिए हमलोगों का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है कि हम सभी राजभाषा को कम से कम कार्यालयीन कार्यों में अपना लेने का प्रयास करें। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत गृह मंत्रालय द्वारा जारी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु भी यह आवश्यक हो जाता है।

आशा है कि राजभाषा विभाग की पत्रिका मेट्रो चेतना का 32वां अंक आपको पसंद आएगा।

मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की कामना करता हूँ।

(पी. उदय कुमार रेड्डी)
महाप्रबंधक

मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

'मेट्रो चेतना' के 32वें अंक के लिए अपनी शुभेच्छाएँ भेंट करते हुए मैं हर्षित हूँ कि मेट्रो रेलवे राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के इस मंच को निरंतर प्रोत्साहित करता रहा है। पत्रिका के मध्यम से हमारा यह प्रयास रहता है कि कर्मिण अपने कार्यालय कार्यों के अनुभवों या अपने रुचि के किसी विषय पर राजभाषा में स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें और साथ ही राजभाषा में काम करने के लिए प्रोत्साहित हो सकें।



सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में राजभाषा हिन्दी के बढ़ते प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जनसंचार का मुख्य उद्देश्य समाज के विशाल वर्ग तक सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की सूचना सम्प्रेषित करना है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक राष्ट्र में विशाल जनसमुदाय तक सूचनाओं का संप्रेषण तभी संभव है जब जनसंचार की भाषा सरल, सुगम और सुबोध हो। साथ ही इसमें अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों का समावेश भी हो। इसी मूल भावना के अनुरूप जनसंचार माध्यमों की हिन्दी सामान्य बोलचाल की भाषा के निकट होती है जिसमें मानकता के मापदण्ड काफी हद तक नहीं होते।

परंतु जब हम कार्यालयीन हिन्दी की बातें करते हैं तो यह कुछेक मायनों में जनसंचार माध्यमों की भाषा से थोड़ी इतर होती है जिसमें पारिभाषिक एवं मानक शब्दावलियों का यथोचित उपयोग वांछित होता है। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को सुगम और सरल बनाने के प्रयास में हमें यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि इसका मूल और मानक स्वरूप बना रहे।

राजभाषा के प्रयोग - प्रसार का दायित्व न केवल सरकारी कर्मचारियों का है अपितु राष्ट्र के समस्त नागरिक संविधान के प्रावधानों के तहत इसके विकास के लिए आबद्ध हैं। जब राष्ट्र का समस्त या अधिकांश काम-काज राजभाषा में होने लगे तभी इसके राजभाषा होने की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए प्रत्येक नागरिक को अपने कार्यक्षेत्र में अपेक्षित प्रयास करने होंगे।

सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होनेवाले सभी प्रपत्रों, दस्तावेजों, विजिटिंग कार्ड आदि के शीर्षादि हिन्दी या आवश्यकतानुरूप द्विभाषी रूप में मुद्रित कराए जाएं। संभव हो तो व्यावसायिक और व्यक्तिगत पत्रादि भी हिन्दी में ही लिखे जाएं।

कंप्यूटर पर हिन्दी टंकण की सुविधा सुनिश्चित हों। व्यावसायिक बैठकों, संगोष्ठियों आदि में चर्चाएं, वार्ताएं हिन्दी में की जाएं तो ये छोटे-छोटे प्रयास आनेवाले समय में राजभाषा का प्रयोग क्षेत्र में यथोचित वृद्धि करेंगे।

आशा है मेट्रो चेतना का वर्तमान अंक हमारे प्रयासों के अनुरूप सफल होगा। मैं अपनी ओर से सभी प्रबुद्ध पाठकों को शुभकामनाएं देता हूँ।

सतीश कुमार

(सतीश कुमार)

प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

मेट्रो चेतना का एक और नया अंक, एक और नया संकल्प- रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार राजभाषा को उन्नत स्वरूप दिलाने का ध्येय लिए पत्रिका पुनः आपके समक्ष प्रस्तुत है।



मेट्रो रेलवे द्वारा एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की गई, इस रेलवे के बढ़ते अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत हुगली नदी की गंभीरतम गहरी सीमाएं आबद्ध हो गई।

साथ ही 'ग' क्षेत्र स्थित कार्यालय होने के बावजूद भाषा प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, प्रोत्साहन योजनाओं और विभिन्न सूचना तथा ज्ञानपरक (राजभाषा से संबंधित) कार्यक्रमों के माध्यम से, मेट्रो रेल, बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने की ओर सचेष्ट है।

मेट्रो चेतना के इस अंक में हिन्दी के हस्ताक्षर में निराला जी की कविता 'स्नेह-निर्झर बह गया है' और अमीर खुसरो की मुकरियों पर आधारित रचना 'कह मुकरियाँ पढ़ना ना भूलें। 'आओ पेड़ लगाएं', 'पर्यावरण और हम', 'नीलोफर-एक एहसास' तथा 'संज्ञानात्मक विसंगति' इस अंक के अन्य आकर्षण हैं। आग्रह और चेष्टा का ही प्रतिफल है कि पत्रिका के इस अंक में हिन्दीतर लेखक, लेखिकाओं की कई रचनाएं स्तरीय, पठनीय और रुचिकर बन पड़ी हैं।

रचनाओं को पढ़कर उनकी प्रतिक्रिया अवश्य दें। पत्रिका को और आकर्षक बनाने संबंधी सुझाव भी प्रेषित करें।

हमें आपके पत्रों की अपेक्षा रहती है।

शेष अगले अंक में।

किरण बोस

(किरण बोस)

सारथी बदल – विनम्रता का दुर्लभ उदाहरण

मेट्रो रेल के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने दिनांक 31.10.2023 को विनम्रता का एक दुर्लभ और अनुपम उदाहरण पेश करते हुए अपने आधिकारिक कार ड्राइवर श्री कार्तिक मंडल को उसकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्वयं ड्राइव करते हुए उसे अपनी सीट पर बैठने का सम्मान और गौरव भेंट किया। श्री रेड्डी ने एक कर्मचारी की कर्तव्यनिष्ठा और समयपाबंदी के सम्मान में यह सर्वोत्तम उपहार भेंट कर समस्त मेट्रो कर्मियों के समक्ष नायाब उदाहरण का प्रतिमान स्थापित किया। यह सम्मान और प्यार निश्चय ही मेट्रो कर्मियों के बीच नई ऊर्जा का संचार करेगी।



अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड द्वारा ईस्ट वेस्ट मेट्रो (ग्रीन लाइन) के हावड़ा मैदान से एस्प्लानेड खंड का निरीक्षण



दिनांक 28.11.2023 को श्रीमती जया वर्मा सिन्हा अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड द्वारा ईस्ट वेस्ट मेट्रो के हावड़ा मैदान से एस्प्लानेड तक के खंड का निरीक्षण किया गया। हावड़ा मैदान स्टेशन से शुरुआत करते हुए अध्यक्ष महोदया ने हुगली नदी के नीचे एस्प्लानेड स्टेशन तक मेट्रो में यात्रा की। उन्होंने इस स्टेशन पर प्रदान की जाने वाली विभिन्न यात्री सुविधाओं के साथ-साथ लिफ्टों, एस्केलेटर और एएफसी-पीसी गेटों का भी निरीक्षण किया। महाप्रबंधक श्री रेड्डी ने उन्हें ईस्ट-वेस्ट मेट्रो परियोजना के 3-डी मॉडल और योजनाबद्ध आरेख के प्रदर्शन के माध्यम से काम की प्रगति से अवगत कराया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न

मेट्रो रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी की अध्यक्षता में दिनांक 13.12.2023 को संपन्न हुई। इस अवसर पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने के विभिन्न उपायों पर चर्चा की गई। मौके पर महाप्रबंधक द्वारा श्री राजेश कुमार, प्रधान संरक्षा अधिकारी को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा प्रदत्त रजत पदक एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर राजभाषा पखवाड़ा-2023 के दौरान अधिकारियों के लिए आयोजित प्रश्नमंच प्रतियोगिता में शामिल अधिकारियों को महाप्रबंधक महोदय द्वारा पुरस्कार स्वरूप उपहार भी प्रदान किया गया।



मेट्रो रेलवे में 77वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

मेट्रो रेलवे में दिनांक 15.08.2023 को 77वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने मेट्रो रेल भवन प्रांगण में राष्ट्रीय ध्वज फहराया और मेट्रो आरपीएफ की परेड का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उपस्थित सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में मेट्रो रेलवे की उपलब्धियों की जानकारी साझा की।

‘मेट्रो रेलवे’ में ‘राजभाषा पखवाड़ा-2023 का आयोजन

मेट्रो रेलवे, कोलकाता में हिंदी दिवस के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति दिनांक 14.09.2023 से 27.09.2023 तक राजभाषा पखवाड़ा-2023 का आयोजन किया गया। 14.09.2023 को मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री सतीश



कुमार एवं अन्य वरीय अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर पखवाड़ा का उद्घाटन किया। इस दौरान अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए राजभाषा संबंधी प्रतियोगिताएं जैसे प्रश्नमंच, कहानी लेखन, डिक्टेशन एवं आशुलिपि, हिंदी टंकण आदि आयोजित की गईं।

मेट्रो रेलवे में विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार (वीआरएसपी)-2023

दिनांक 23.08.2023 को आयोजित कार्यक्रम में मेट्रो रेल ने अपने कर्मियों को विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार (वीआरएसपी) से सम्मानित किया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सराहनीय सेवाएं प्रदान करने वाले ईमानदार और समर्पित कर्मचारियों और अधिकारियों के चयनित समूह को सम्मानित किया। दक्षिणेश्वर मेट्रो स्टेशन ने सर्वश्रेष्ठ रखरखाव वाले मेट्रो रेलवे स्टेशन का पुरस्कार जीता।



‘मेट्रो कर्मियों द्वारा हिंदी नाटक ‘हनुआ का बेटा’ की प्रस्तुति



राजभाषा पखवाड़ा-2023 समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 27.09.2023 को टॉलीगंज स्थित ‘ऑफिसर्स क्लब’ में मेट्रो रेल कर्मियों द्वारा एक हिंदी नाटक ‘हनुआ का बेटा’ का मंचन किया गया जिसने उपस्थित दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। यह नाटक अखिल रेल स्तर पर आयोजित होनेवाले नाट्योत्सव में भी मेट्रो रेलवे का प्रतिनिधित्व करेगा। इस अवसर पर राजभाषा पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल घोषित अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

नीलोफर-एक एहसास

“केसर की तासीर सा है मेरा एहसास
जाहिर कम होता है महकता ज्यादा है
अब केसर सी बिखर चुकी है मुझमें तुम्हारी यादें।
कभी महका देती है तो कभी रंग देती है।”

मैं अपने ख्यालों में गुम थी।

हमारे इंजीनियरिंग कॉलेज का आखिरी वर्ष था। हम चार सहेलियों के बिछड़ने के दिन क्रमशः नजदीक आते जा रहे थे। हमलोग भरसक इस कोशिश में लगे रहते कि साथ में मस्ती का कोई लम्हा छूट ना जाए। परीक्षा खत्म होते ही जुही ने खुशखबरी सुनाते हुए कहा, “निलिमा, मैं और समीर शादी के बंधन में बंधने जा रहें हैं।”

सचमुच? बधाई हो! मगर मुझे ज्यादा आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि मैं उनकी नज़दीकियों से वाकिफ थी।

जुही का पुस्तैनी घर कभी श्रीनगर के बडगाम जिले में हुआ करता था। जहां से पलायन के बाद वे लोग दिल्ली में आकर बस गए थे। अपने घर लौटने की इच्छा लिए ही उसकी दादी इस जहां से रुखसत हो गईं।

अब दादी कि अंतिम इच्छानुसार जुही के परिवारवालों ने यह तय किया कि शादी श्रीनगर से की जाए। अतः शादी के लिए वहाँ एक रिसॉर्ट बुक किया गया। फिर क्या था, जुही की जिद और मिश्री घुली जुबान के आगे मेरी माताश्री की एक न चली। उन्होंने मुझे उनके साथ कश्मीर जाने की इजाजत दे दी। मैं खुशी से नाच उठी। हम सहेलियों ने अनेक खरीदारियाँ साथ- साथ की। फिर नियत समय पर श्रीनगर के लिए उड़ चले।

हमारे श्रीनगर पहुँचने से पहले वहाँ काफी बारिश हो चुकी थी। हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही सर्द हवाओं के झोंको ने हमारा आलिंगन कर स्वागत किया। दूर चांदी जैसे चमकीले ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ की सफ़ेद चादर चढ़ी हुई थी। हल्का सा कोहरा ऐसा लग रहा था मानो बादल जमीन पर चल रहे हों या जमीन उड़कर बादलों में समा गई हो।

नजरो के सामने सी आर पी एफ के जवान तैनात दिखाई दिये। तैनात जवानों के चेहरे से आप कुछ भी पढ़ सकने में असमर्थ होते हैं। हमारी गाड़ी खड़ी थी। कुछ ही समय में गाड़ी डल झील की ओर मुड़ गई। एफ एम रेडियो पर कश्मीरी गाना बजने लगा था। तब तक कोहरा भी छंट चुका था। मैंने खिड़की से बाहर कैमरे की नजर से आकाश को निहारते हुए देखा कि आकाश में नीले रंग की गजब की कलकारी हो रखी थी। अरे नीलिमा! तेरी फोटोग्राफी अभी से शुरू हो गई? कहकर प्रिया सोनल और जुही के साथ हंसी ठिठोली में व्यस्त हो गई।

हर तरफ का नजारा बहुत ही खुशगवार था। कुछ ही देर में हम सभी अपने गंतव्य तक पहुँच गये। जुही के परिवार वाले नाच-गान में व्यस्त थे। हमलोग भी उनके साथ जश्र में शामिल हो गये।

अगले दिन रात में जुही की बारात आने वाली थी। अहले सुबह कुछ रीति रिवाजों के बाद मैं प्रिया और सोनल गुलमर्ग की वादियों का आनंद लेने निकल पड़े। आंटी जी ने हमें शाम से पहले लौटने की हिदायत दे रखी थी।

हमारी गाड़ी कुछ ही देर में छोटे- छोटे कश्मीरी गांवों और खेतों को पार करते हुए घाटी में प्रवेश करने वाली थी। रास्ते में अखरोट और सेबों से लदे बागों को देखकर मैं आश्चर्यचकित थी। इस समय सेब के पेड़ फल से लदे पड़े थे।

अरे रोको- रोको, भैयाजी थोड़ी देर के लिए गाड़ी रोको! ड्राइवर ने हड़बड़ाकर गाड़ी रोक दी।

जी, क्या बात हुई?

हमें इन सेबों के बाग में जाना है। लाल- लाल सेबों से लदे हुए पेड़ों को देखकर मैं चिल्ला उठी थी। पल भर में हमलोग बगीचे के अंदर थे। मैं अपनी डी एस एल आर कैमरे से फोटो क्लिक करने लगी। मुझे लगा यहाँ मेरी फोटोग्राफी का शौक अवश्य परवान चढ़ेगी।

हमारे उतावलेपन पर विराम लगते हुए ड्राइवर अशरद जी ने हमें टोका - कृपया जल्दी गाड़ी में तशरीफ लाए, हमें अभी बहुत दूर जाना है।

फिर से हमारे सफर कि शुरुआत हुई, अब घाटियां भी नजर आने लगी। सड़क के दोनों ओर हरे-भरे ढलानों में चीड़, देवदार के वृक्ष ठाट से खड़े मुस्कुरा रहे थे। उन पेड़ों को चीर कर जाते घुमावदार मार्ग देख कर मन में अजीब सा आवेग था।

पहाड़ों की ढलान पर क्या दृश्य थे! सड़क के दोनों ओर सफेद और रंग-बिरंगे जंगली पुष्पों कि चादर बिछी हुई थी।

रास्ते में कई बार गाड़ी रोक कर मैंने तस्वीरें ली, लगा शायद इस बार की वार्षिक फोटोग्राफी प्रतियोगिता का अवार्ड मैं ही जीतूंगी।

कुछ ही देर में अशरद जी ने गाड़ी रोकते हुए कहा, "आगे पहाड़ तक का सफर आप लोगों को 'केबल कार' से करना पड़ेगा। मैं नीचे यहीं खड़ा रहूंगा।

अरे नीलू! गाड़ी से निकल, किस दुनिया में खोई हो? प्रिया ने मुझे कोहनी मारते हुए कहा। मैं हड़बड़ाकर नीचे उतर पड़ी। दरअसल तेज नीर की आवाज, देवदार के पेड़ों के साथ सूर्य की आँख मिचौली और एक अनंत पुकार पहाड़ों की, मैं अब पहाड़ों से एक जुड़ाव सा महसूस करने लगी थी और एक अलग ही दुनिया में खोई थी। फिर 'केबल कार' की सवारी ने हमें कुछ ही क्षणों में ऊपर तक पहुंचा दिया।

यहाँ चारो ओर बर्फ ही बर्फ थे। सूर्य कि सुनहरी किरणे बर्फली चोटियों से एक सार हो कर अदभुत दृश्य उत्पन्न कर रही थी।

सोनल और प्रिय सेल्फी लेने और सर्वाधिक आनंदमयी खेल 'बर्फ का खेल' खेलने में मशगूल हो गई। मैं चारों ओर की खूबसूरत दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करने लगी।

यहाँ के बर्फले चोटियों वाले पर्वत, खेत, हिमाच्छादित वृक्ष, खुला आकाश और इनका सम्मिश्रण के दृश्यों को कैद करते हुए कब मैं ढलान के पास पहुँच गई इसका मुझे कुछ अंदेशा ही न हुआ।



अचानक मैं लड़खड़ाई, अपने आप को संभालने की कोशिश की पर मैं फिसलने लगी थी। आंखे बंद कर मैं जोरों से चिल्लाई, लगा अब सब कुछ समाप्त।

तभी अचानक किसी के हाथ मुझे ऊपर की ओर खींचने लगे; एक आवाज आई, "मेरे हाथों को ज़ोर से पकड़कर ऊपर आने की कोशिश कीजिए।"

किसी ने मुझे ऊपर खींच लिया था। कुछ क्षणों तक मेरी आंखे बंद थी। जब पलके खुली तो ये जाना कि मौत ने आज फिर मुझे जिंदगी के हवाले कर दिया है। मैं बर्फ पर ठीक से खड़ी भी न हो पा रही थी कि आवाज आयी, 'मोहतरमा एड़ी पर जोर लगाकर खड़ी हो जायें।

कुछ सहमी और सकुचाई हुई मैंने देखा, वह एक दुबला-पतला, मध्यम कद एवं गहरी नीली आँखों वाला युवक था। कुछ चुम्बकीय आकर्षण तो जरूर था उसके व्यक्तित्व में, जिससे मुझे कुछ कहते न बना। उसने कहा

आप फोटोग्राफी में व्यस्त थी और अचानक फिसलने लगी थी। शुक्र है कि मैंने आपको देखा, वरन् खुदा न करे इन ढलानों से नीचे जिंदगी का बचना नामुमकिन है।

मैं सिहर उठी, उसे शुक्रिया कहती कि फिर उसने कहा, लगता है आपका कैमरा बर्फ़ीली घाटी में दफन हो चुका है।

क्या मतलब? मैं चौंक पड़ी। मेरे हाथों से मेरा डी एस एल आर कैमरा गायब था।

मैं अपने आंसू न रोक पायी और कहा, इसमें मेरे खींचे अनगिनत फोटो थे, जो मैं फोटोग्राफी प्रतियोगिता के लिए भेजने वाली थी।

तब तक सोनल और प्रिया मेरे पास आ चुकी थीं। सब कुछ जानकार वे भी सहम गईं। फिर क्या था! आनन-फानन नीचे उतरने के लिए हमलोग केबल कार में जा बैठे। बैठते समय मैंने उस अजनबी को खोजा पर वो वहाँ नहीं था।

फिर तो जैसे- तैसे शादी से निपटकर हमलोग वापस घर आ गए। मन में एक टीस थी, हमेशा की तरह माँ ने धीरज धराया।

रात में जब मैंने अपना 'बैग- पैक' खोला तो उसमें से एक लिफाफा नीचे आ गिरा और कुछ तस्वीरें बिखर गईं। उठाकर देखा तो वे तस्वीरें उस दिन गुलमर्ग में खींची गई थीं। कुछ में मैं भी कैमरे से फोटो खींचती हुई नजर आ रही थी।

सभी तस्वीरें यकीनन जीवंत और नयनप्रिय थे। एक छोटा सा कागज का टुकड़ा जिसमें लिखा था-

मोहतरमा 'नीलोफर जी' जानता हूँ ये आपका नाम नहीं है, इस नाम से संबोधित करने के लिए माफी चाहता हूँ। उस दिन आपको तस्वीरें लेते हुए देखकर ऐसा लगा मानो गीली बर्फ पर 'नीलोफर' खेल गए हों। आप एक अच्छी फोटोग्राफर हैं, ऐसा मैं अपने तजुर्बे से कह रहा हूँ। आप किसी प्रतियोगिता की बात कह रही थीं, जिसमें भाग न ले पाने के कारण उदास और चिंतित थीं। कुछ

तस्वीरें जो मैंने उस समय लिए थे, आपके बैग- पैक में डाल रहा हूँ। इन्हें अगर आप चाहें तो प्रतियोगिता के लिए भेज सकती हैं।

खुदा करे आप ये अवार्ड जीत जाएं। आमीन।

धृष्टता के लिए क्षमाप्रार्थी।

पत्र पढ़कर मैं अचंभित थी। न नाम, न पता और न ही फोन नंबर, पत्र में कुछ भी नहीं लिखा था।

मुझे नीली आँखों वाला युवक याद आ गया। कौन था वह? कोई फोटोग्राफर! या गाइड! या कोई शुभचिंतक! जिसे सही से मैं शुक्रिया तक न कह पायी थी।

अब क्या करूँ? मैं कशमकश में पड़ गई। यह एक उच्चतम प्रकार का आनंद और गहरे दुख का मिला-जुला अनुभव था।

अचानक तालियों के गड़गड़ाहट से मेरी तंद्रा टूटी। हॉल में अनाउंसमेंट हुआ था-

इस बार की फोटो प्रतियोगिता की विजेता हैं- नीलिमा त्रिपाठी 'नीलोफर'।

तूने अपना उपनाम नीलोफर कब से रख लिया? प्रिया ने फुसफुसाते हुए पूछा।

मैं एक मंद मुस्कान के साथ अवार्ड लेने के लिए खड़ी हो गई।

उसके बाद मुद्दतें गुजर गयीं। मैं पहाड़ों में जाने का मौका कभी नहीं छोड़ती। अभी भी तस्वीरें लेते हुए मेरी आँखें उस नीली आँखों वाले 'नीलोफर' को ढूँढती हैं। शायद किसी ने ठीक ही कहा है-

**"छुपे छुपे रहते हैं सरेआम नहीं हुआ करते,
कुछ रिश्ते बस अहसास होते हैं
उनके नाम नहीं हुआ करते।"**

- रूपा भट्टाचार्य
पत्नी - शुभाशीष भट्टाचार्य
उप मु. परि. प्र./ओ.एंड एम

आओ पेड़ लगाएं

हरियाली किसे पसंद नहीं होती। हराभरा वातावरण मन को प्रफुल्लित कर देता है, थोड़ी देर तक के लिए सारी थकान उतर जाती है। हर किसी का सपना एक छोटा सा घर होता है जहां ढेर सारे पेड़ पौधे लगे हों।

आश्चर्य की बात तो ये है कि छोटे-छोटे बच्चे भी 'घर' की ड्रॉइंग ऐसे बनाते हैं जिसमें घर के सामने कुछ फूल के पौधे और कुछ फलदार वृक्ष अवश्य होते हैं भले ही वो बच्चे प्लैट्स में ही क्यों ना रहते हों। हरियाली का सीधा असर वातावरण पर तो पड़ता ही है साथ ही मन पर भी बहुत

अनुकूल असर होता है। हमें भांति-भांति के पौधे लगाने चाहिए क्योंकि प्रकृति में हर पौधे की अपनी महत्ता होती है, आज बहुत से पौधे विलुप्त हो रहे हैं क्योंकि हमें उनका महत्व ही नहीं पता और



कुछ को इसलिए उखाड़ कर फेंक देते हैं क्योंकि हम उन्हें पहचानते ही नहीं। अभी कुछ वर्षों से हम गिलोय और एलोवेरा से परिचित हुए और इन्हें उपयोग में लाने लगे हैं, अन्यथा ये पौधे हमारे आस पास होते हुए भी महत्वहीन थे। हमें पौधे लगाने की आदत बना लेनी चाहिए जिसके पास जितनी जगह हो उतने पौधे लगाने की अवश्य कोशिश करनी चाहिए। बहुतल में भी बॉल्कनी और छत में गमलों में पौधे रखे जा सकते हैं, दैनिक उपयोग में आने वाले कुछ पौधे जैसे तुलसी, पुदीना, करी पत्ता, लैमन ग्रास, मिर्च आदि बड़े आराम से गमलों में लगाए जा सकते हैं। कलम

द्वारा विकसित किए गए फलदार वृक्ष जैसे अमरूद, नींबू, अनार आदि भी लोग अपनी छतों पर बड़े गमलों में लगा रहे हैं और उनका सुख उठा रहे हैं। आप अपने परिवार की आवश्यकता हेतु सब्जियां और फल उगा कर ताजी सब्जियों का सुख तो उठा ही सकते हैं और साथ ही इससे बाजार पर निर्भरता भी कम हो जाएगी।

इसके अलावा पीपल, बरगद, नीम जैसे उपयोगी वृक्ष भी हम सहेज सकते हैं। विकास की दौड़ में इन विशाल वृक्षों की बलि चढ़ रही है। पहले सड़क के दोनों ओर

छायादार और फलदार वृक्ष लगे होते थे। गर्मियों में राहगीरों को छाया भी मिलती थी और पक्षियों को बसेरा भी। हमारी बाल्यावस्था के जाने कितने संस्मरण इन वृक्षों से आम, जामुन, आदि तोड़कर

खाने से जुड़े हैं पर क्या हमारे बच्चों की स्मृति में ऐसा कुछ होगा? नहीं। क्योंकि अब ये वृक्ष बचे ही नहीं। कभी सड़कों के चौड़ा करने के कारण कभी प्लैट्स इमारतों को बनाने के कारण इन वृक्षों को बेरहमी से काट दिया गया। आज सड़कों के किनारे यदि लगाए भी जाते हैं तो कुछ छोटे वृक्ष जैसे कनेर, चम्पा आदि। नीम, पीपल, बरगद आदि अपने आप ऐसी जगहों पर उगते हैं जहां इनका भविष्य नहीं होता, छतों की नालियों के पास, पाइप के नीचे या दीवारों की दरारों में जहां कट जाना ही इनकी नियति होती है लेकिन हम थोड़े से प्रयास से इन वृक्षों को

बचा सकते हैं और इन्हें नया जीवन दे सकते हैं, हमारा ये कार्य प्रकृति पर उपकार होगा और ऐसे अच्छे कर्म का फल प्रकृति हमें दस गुणा देगी। तो जब भी आपको ऐसी किसी जगह पर ये पौधे निकले दिखें तो सावधानी से इन्हें निकालकर गमलों में लगा लीजिए और थोड़ा बड़ा होने पर इन्हें बारिश के मौसम में कहीं जमीन पर लगा दीजिए, जहां ये सुरक्षित हों और आसानी से बड़े हो सकें। हर व्यक्ति को अपने जीवन काल में कम से कम दस बड़े वृक्ष लगाने का प्रयास करना चाहिए, याद रहे पौधे लगाना ही नहीं है बल्कि उन्हें पालना पोसना भी है जिससे वो बड़ा वृक्ष बन सके। एकबार आप ऐसा करने लगेंगे तो आपको इतना सुख मिलेगा कि आप हमेशा इस कार्य के लिए समर्पित हो जाएंगे। आज बहुत से लोग और समूह पर्यावरण को बचाने के लिए इस कार्य में लगे हुए हैं, आप भी प्रयास करें। बच्चों को बचपन से ही पौधे लगाने और उन्हें पानी देने की आदत सिखाइए, ये उनके व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक होगा। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि पौधे लगाना तनाव को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है जिसे कार्य से तनाव भी दूर होता हो और पर्यावरण भी अच्छा होता है वो तो अवश्य करना चाहिए। आप आदत बनाएं कि अपने और अपनों के जन्मदिन पर एक पौधा अवश्य लगाएं। इस तरह खूब सारे पौधे भी लगेंगे और स्मृति भी बनी रहेगी। अनेक लोगों ने अपनी वैवाहिक वर्षगांठ, जन्मदिन आदि पर पौधे लगाने की रस्म शुरू की है। कुछ लोग अपने बुजुर्ग माता पिता की स्मृति में भी उनके मरणोपरांत पौधे लगाते हैं, यह एक अच्छी पहल है।

तो आइए पेड़ लगाएं
अपनी धरती को हरा-भरा बनाएं
बच्चों को उनका बचपन लौटाएं
आइए, पेड़ लगाएं।

— अलका सिंह

पत्नी - आर. एन. एस. परिहार
महाप्रबंधक के सचिव

जिंदगी

आँखों से बहती लुनाई
और इससे भीगा
एक लम्हा
सूरज की कड़क रोशनी में
डाल रखा है,
सूखने को,
इसे भी,
रख दूँगी
तकिए के नीचे,
जो पिटारी रखी है ना मेरी –
उसमें,
एक और पिटारी है मेरी,
उजली धूप की मानिंद
जिसे बड़े जतन से,
सहेज रखा है मैंने,
खिलिखिलाते हुए लम्हों से,
स्नेहसिक्त छुअन से,
भावनाओं की सिहरन से।
और हां,
जब भी अकेली होती हूँ ना,
तो खुलती हूँ,
ये पिटारियाँ
जीती हूँ, फिर एक बार
इन लम्हों को,
पुरसुकून हो कर,
क्योंकि, आंसुओं और खुशी के,
खट्टे मीठे यादों की,
किताब है जिंदगी
थोड़े से सुख और कुछ दुख
का घटता-जुड़ता
बनता-बिगड़ता,
बड़ा उलझा सा एक हिसाब है,
जिंदगी।

— किरण बोस

राजभाषा अधिकारी

कह मुकरियाँ

शीर्षक पढ़ कर कुछ अटपटा सा लग रहा होगा कि इसका क्या मतलब है, लेकिन जब सुधी पाठक थोड़ा ध्यान से पढ़ेंगे तो अर्थ समझ में आ जाएगा। कह कर मुकर जाना ही कह मुकरियाँ हैं। कोई बात कहने के बाद कहना कि हमने तो ये नहीं कहा था।

हिन्दी साहित्य को "कह मुकरियाँ" से समृद्ध बनाया "अमीर खुसरो" साहब ने। इनको शायद सब लोग जानते ही होंगे, बहुमुखी प्रतिभा के धनी खुसरो साहब का जन्म एटा जिले के परियाली गाँव में 1253 ई. में हुआ था। अमीर खुसरो ने दिल्ली सल्तनत के सात सुलतानों के दरबार की शोभा बढ़ाई थी। इनको खड़ी बोली का प्रथम कवि भी माना जाता है। कहते हैं कि फारसी भाषा को हिन्दी का दामन खुसरो साहब ने ही थमाया था।

अरबी, फारसी के साथ- साथ खुसरो को अपने हिन्दी भाषा के शान पर भी गर्व था। इनको तूती- ए- हिन्द के नाम से भी जाना जाता है।

हिन्दी कविता के इतिहास में खुसरो की पहेलियाँ, सूफी साखी, कव्वाली, कह मुकरियाँ, हिन्दी मिश्रित गजलें, रुबाइयाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

अमीर खुसरो निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। इनकी रचना छाप तिलक, सब छीनी, तोसे नैना मिलाय के (कव्वाली) बहुत प्रसिद्ध है जो निजाम साहब को समर्पित है। इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ :-

- (1) काहे को ब्याही विदेश रे लखिया बाबुल मोरे...
- (2) अम्मा मेरे बाबा को भेजो री कि सावन आया...
- (3) बहुत कठिन डगर है पनघट की, कैसे भर लाऊँ मैं मधवा से मटकी...

अमीर खुसरो एक सूफियाना कवि थे, इसके साथ- साथ इनको मध्यकालीन भारत का विद्वान और उर्दू साहित्य का जनक भी माना जाता है।

संगीत के क्षेत्र में भी इनका अमूल्य योगदान है। गायन में कव्वाली विधा से परिचित कराया तो वीणा से सितार और पखावज से तबला बनाया।

खुसरो ने अपने समय की आम जनता की भाषा जो "देहलवी हिन्दी" कही जाती थी उसमें "पहेलियाँ" और "कह मुकरियाँ" की रचना की है।

अगर खुसरो ने आम जनता की भाषा को अपनी रचना का माध्यम बनाया तो स्वाभाविक है कि वे आम जनता के बीच जाते रहे होंगे। इसी घुमक्कड़ जिज्ञासा के फलस्वरूप उन्होंने "कह मुकरियाँ" की रचना की होगी। गाँव- गाँव अपने भ्रमण के दौरान खुसरो ने पनघट, खेत, नदी, तालाब पर स्त्रियों की बातों को सुना होगा। बहुधा स्त्रियाँ अपने घर- परिवार, बच्चे, ससुराल, मायका और अपने पति की बातें करती हैं। इसी वार्ताक्रम में एक स्त्री दूसरी स्त्री को अपने पति के विषय में परोक्ष रूप से बताती है और जब सखी स्त्री समझ जाती है और साजन कहती है तब पहली स्त्री कहती है नहीं सखी ये साजन नहीं कोई और है यानि सब कुछ बताकर मुकर जाती है कि अपने साजन के बारे में नहीं बात कर रही थी, ये तो कोई और है-

उदाहरण - नंगे पाँव फिरन नहीं देत, पाँव में मिट्टी लगन नहीं देत, पाँव का चूमा लेत निपूता, एक सखी साजन ना सखी जूता।

हम कह सकते हैं कि साजन और जूते के लक्षणों को कितनी चतुराई से व्यक्त किया गया है।

इसी प्रकार कुछ अन्य "कह मुकरियाँ" हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत है। पाठक स्वयं विश्लेषण कर सकते हैं कि साजन और उत्तर स्वरूप वस्तु या व्यक्ति विशेष में कितनी समानता है -

- (1) बन ठन कर सिंगार करे, धरे मुंह पर मुंह प्यार करे प्यार से मो पे देत है जान, ए सखी साजन? ना सखी पान
- (2) जब मेरे मंदिर में आवे, सोते मुझको आ जगावे पढ़त

फिरत वह विरह के अच्छर, ए सखी साजन?
ना सखी मच्छर

(3) एक सजन वह गहरा प्यारा, जा से घर मेरा उजियारा
भोर भई तब विदा किया, ए सखी साजन?
न सखी! दीया

(4) जब मांगू तब जल भरि लावे, मेरे मन की तपन बुझावे
मन का भारी तन का छोटा, ए सखी साजन?
न सखी! लोटा

(5) उमड़ घुमड़ कर वह जो आयो, अंदर मेरे पलंग
बिछायो, मुझ संग
ऐसो लागा नेह, ए
सखी साजन?
ना सखी! मेघ

(6) बरस- बरस वह
देस में आवे,
मुंह से मुंह लाग
रस पियावे
वा खातिर मैं खरचे
दाम, ए सखी
साजन?
ना सखी! आम

(7) वो आवे तो शादी
होय, उस बिन
दूजा और न कोय



मीठे लागे वा के बोल, ए सखी साजन? ना सखी! ढोल

(8) बेर बेर सोवत ही जगावे, ना जागू तो काट खावे
व्याकुल हुई मैं हक्की बक्की, ए सखी साजन?
ना सखी! मक्खी

(9) रात समय वह मेरे आवे, भोर भये वह घर उठि जावे
यह अचरज है सबसे न्यारा, ए सखी साजन?
ना सखी! तारा

इन सब मुकरियों को पढ़ने के बाद हम कह सकते हैं
कि मुकरियाँ दो सखियों के बीच वार्तालाप है जिसमें एक

सखी अपने साजन की बातें या लक्षण बताती है। दूसरी
सखी जब पूछती है कि क्या वह अपने साजन की बात कर
रही है तो पहली सखी चालाकी से इंकार कर किसी अन्य
का नाम बताती है जिसका वर्णन या लक्षण साजन से मेल
खाता है।

तकनीकी रूप से हम कह सकते हैं कि कह मुकरियाँ चार
पंक्तियों का छंद या बंध है जिसमें पहली तीन पंक्तियाँ असपष्ट
रूप से किसी संदर्भ या लक्षण का वर्णन करती है। तीसरी पंक्ति
के अंतिम शब्द का तुकान्त शब्द ही उत्तर होता है –

जैसे- मीठे लागें वाके बोल, ना सखी ढोल ए सखी
साजन?

अब खुसरो साहब
की पहेलियों का भी
रसास्वादन किया जाए
– इनकी पहेलियाँ
अब कई - एक प्रकार
की पहेली में उत्तर
निहित रहता है उसको
समझकर बताना होता
है-

उदा०- बीसों का
सिर काट दिया, ना
मारा ना खून किया
(उत्तर- नाखून)

अमीर खुसरो की उत्तर

युक्त पहेलियाँ-

(1) फारसी बोली आईना, तुर्की सोच न पाई ना हिन्दी बोले
आ रसी, खुसरो, बूझने लागे पर आ ई ना
(दर्पण या आईना)

(2) बाला था जब सबको भाया, बड़ा हुआ कुछ काम न
आया खुसरो कह दिया उसका,
अर्थ कहो नहीं छोड़ो गाँव

(3) खड़ा भी लोटा, पड़ा भी लोटा है बैठा और कहे है
लोटा, खुसरो कहे समझ का टोटा

(4) घूम घूमेला लहंगा पहिने, एक पाँव से रहे खड़ी आठ हाथ है उस नारी के, सूरत उसकी लगे परी।
सब कोई उसकी चाह करे, मुसलमान, हिन्दू और छतरी (क्षत्रिय)।

(5) खुसरो ने यही कही पहेली, दिल में अपने सोच जरी श्याम बरन और दाँत अनेक, लचकत जैसे नारी। दोनों हाथ से खुसरो खींचे और कहे तू आ-री कुछ अन्य पहेलियाँ-

(1) एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक ना गिरे।
(आसमान)

(2) एक नारी के दो बालक, दोनों एक ही रंग।
एक फिरे, एक ठाढ़ा रहे, फिर भी दोनों संग। (चक्की)

(3) खेत में उपजे सब कोई खाये,
घर में होवे घर खा जाये। (फूट)

(4) गोल मटोल और छोटा मोटा,
हर दम वह तो जमीं पर लोटा।
खुसरो कह नहीं है झूठा,
जो ना बुझे अकिल का खोटा।

(5) श्याम बरन की है इक नारी, माथे ऊपर लगी प्यारी
जो मानस इस अर्थ को खोले,
कुत्ते की वह बोली बोले। (भौंह)

आशा करती हूँ कि यह लेख पाठकों को पसंद आया होगा। शुभकामनाओं सहित।

– संगीता कुमार

पत्नी - राजेश कुमार

प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी

अखबार की आत्मकथा

जानते हो? पहचानते हो हमें ?
हम घर के एक कोने में संचित रहते हैं
क्या तुम हमें जानते हो हम हैं कौन?
हम सब संचित खबरें हैं- अखबार
हम सब पुरातन खबरें हैं,
कभी हम नाव, कभी बच्चों के किताबों के जिल्द, कभी
खाने का पत्तल बन जाते हैं,
और भी ढेर से कामों में दधीचि सा लगते रहते हैं हम।
हमें दूर फेंक रहे हो? बेच रहे हो रद्दी के भाव
हमें चूल्हे में झोंक रहे हो?
हम जीर्ण हो चुके हैं, पीले पड़ गए हैं इसलिए,
पर हम राजनीति से, घटनाओं-दुर्घटनाओं से, सूचनाओं से
ओत-प्रोत हैं।
एक समय था हम भी ज्वलंत और ताज़ा तरीन थे,
सूचना के आलोक से आलोकित किया था,
काले-काले अक्षरों में सज-धज कर तैयार हुए थे
तुमलोगों के लिए,
हम आज प्रासंगिक नहीं रहे, हम बासी हो गए हैं, तो
दूर कर दिया तुमलोगों ने,
पुरातन को मिटा सकते हो तुम।
पर याद रहे हम रोज-रोज
नई-नई खबरों के साथ आते रहेंगे
हम अखबार हैं, आँखों देखी बयान करते हैं, भाई साहब !
रोज हमारे आस में हमें गले लगाने के लिए
हमारे पुराने होने तक, रद्दी बन जाने तक
फिर इंतज़ार करोगे तुम।

– सुकन्या भट्टाचार्य

सामान्य सहायक

राजभाषा विभाग

संज्ञानात्मक असंगति

अक्सर दिल और दिमाग में ताल मेल नहीं होता, व्यवहार और सोच में असमानता रहती है। इस कशमकश में मन व्यर्थ ही बेचैन रहता है। ये मतभेद किसी एक इंसान के जीवन का आलेख ही नहीं है परन्तु हर एक के जीवन का वृत्तांत है। एक उदाहरण- जैसे कि लोग जानते

हैं कि धूमपान सेहत की लिए हानिकारक है परन्तु फिर भी लोग इसका सेवन करते हैं, और इस बात से परेशान भी रहते हैं। ये उलझन और ऐसी कई असमंजस की स्थितियां इंसान के लिए मानसिक तनाव का स्त्रोत बनती है।

ऐसे ही मतभेद मानवीय संबंधों में भी देखा जा सकता है। मनुष्य इसके उपाय के लिए विभिन्न कोणों से इसका विश्लेषण ढूंढता है और फिर निर्णय लेता है। रिश्तों की गहराई को समझकर उसके मद्देनज़र कोई फैसला करना ही समझदारी है। कभी-कभी हम संज्ञानात्मक असंगति को हल करने के लिए अपने व्यवहार को सही ठहराते हैं। जैसे कि परीक्षा में नकल करने की सोच कि प्रश्न पत्र बहुत कठिन था और हम दुबारा ऐसा नहीं करेंगे। हम पर्यावरण के खतरों के परिणामों को जानते हैं फिर भी हम अपनी सुविधा के लिए इस तरह की गतिविधियों में लगे रहते हैं



और खुद को दिलासा देते हैं कि केवल हम ही इस अभ्यास को जारी रखने वाले व्यक्ति नहीं हैं। **बेन फ्रैंकलिन इफेक्ट** कहते हैं कि जो कोई दूसरों के लिए एक एहसान करता है वह उन्हें पसंद करता है और उनके लिए एक और एहसान करने के लिए तैयार होता है। यह एक कोशिश के काबिल है।

असंगति व्यापक रूप से प्रचलित है और इसका उपयोग बहुत से भिन्न विचारों, व्यवहारों और दृष्टिकोणों की व्याख्या करने के लिए किया जा सकता है। संज्ञानात्मक असंगति व्यक्तिगत और

सामाजिक परिवर्तन के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकता है। जब किसी व्यक्ति को उसके व्यवहार और मूल्यों में विसंगतियों के बारे में जागरूक किया जा सकता है, तो यह उसे बदलाव से गुजरने और इसे सद्भाव की स्थिति में लाने के लिए कार्य करने के लिए सशक्त बनाता है। यह व्यक्ति और समाज के लिए फायदेमंद है।

– रत्ना गर्ग

पत्नी - देवेन्द्र कुमार
मुख्य इंजीनियर(निर्माण)

राष्ट्रभाषा हिंदी उस धागे के समान है जो फूल रूपी अन्य भारतीय भाषाओं को अपने में पिरोए रखती है तथा वह हमारे देश को एकता के सूत्र में बाँधे रखती है।

– रामधारी सिंह दिनकर

पर्यावरण और हम

प्रकृति द्वारा हमें दिए गए पंच तत्व- वायु, आकाश, जल, भूमि और अग्नि हमारे जीवन के मूल आधार स्तंभ हैं। इनमें से एक भी ना हो तो जीव के अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती। आज की तारीख में 8 बिलियन से अधिक जनसंख्या हो गई है दुनिया की, और हम लगातार प्रकृति के दोहन/शोषण में लगे हुए हैं।

जी हां, प्रकृति का विस्तृत रूप- नदियां, पहाड़, झरने, पेड़-पौधे, पक्षियों का कलरव और दूर तक फैली हरियाली, सूर्योदय, सूर्यास्त, बारिश, हमारे मन को असीम आनंद का अनुभव कराते हैं। अपनों का साथ भी असीम आनंद का श्रोत है। किन्तु स्थिति बड़ी दुःखद हुई जा रही है। हमारे आसपास की आबोहवा विषाक्त होती जा रही है। वन, जो



प्रकृति की गोद से निकल कर महानगरों के कांक्रीट जंगल में, विभिन्न कृत्रिम सुख-सुविधा का आदी मानव कई मानसिक, वैचारिक व सांसारिक जटिलताओं में बुरी तरह जकड़ गया है। बहती हवा में जैसे पक्षी कल की चिंता और आज की फिक्र छोड़ मस्त होकर उड़ान भरते हैं/जीते हैं; मानव जीवन भी ठीक उसी प्रकार जीए जाने के लिए मिला है। किन्तु क्या हम जीवन जी रहे हैं? स्वयं से यह सवाल करना नितांत ही आवश्यक बन पड़ा है। जीवन मशीनी और जीव मशीनों पर आश्रित! आज की कड़वी सच्चाई यही है।

दो घड़ी के लिए आँखें मूँद कर देखें। वह कौन सी चीज हैं, जो हमें सुकून, चैन और जीवन के तनाव से थोड़ी राहत, थोड़ा आराम देते हैं।

महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन हैं, विभिन्न पशुओं-पक्षियों के आवास/आश्रय हैं, लगातार खत्म होते जा रहे हैं।

ऐसी स्थिति में पढ़े लिखे और जानकार नागरिक होने के नाते हमारा कर्तव्य बनता है कि हम प्रकृति प्रदत्त इस अमूल्य धरोहर-वन, जंगल, वन्य प्राणी के संरक्षण के लिए आवाज उठाएं। अपनी ओर से कम से कम हम सभी यह तो प्रण कर ही सकते हैं कि साल भर में कम से कम 10 वृक्ष लगाएं। रंग-बिरंगे फूल, कंद मूल, लाभप्रद औषधि दायक वृक्ष या स्वादिष्ट फलों के पेड़, कुछ भी लगाएं पर लगाए जरूर। जिम्मेदार माता-पिता के रूप में हमें देखकर हमारी अगली पीढ़ी भी इसका अनुसरण जरूर करेगी। जीव और जंगलों के बचाए रखने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

हमारे स्कूलों में समाज विज्ञान (social Science)

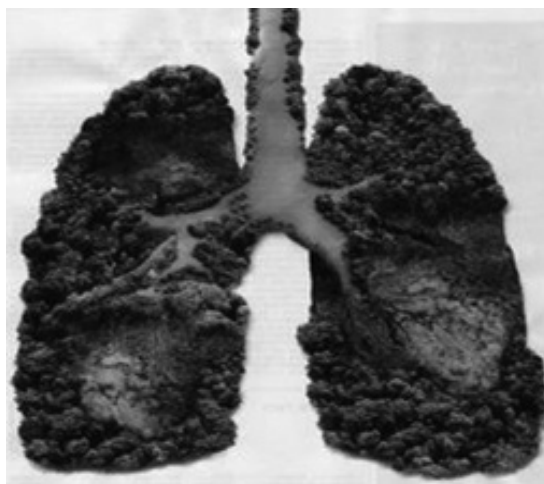


विषय रखा गया है, जिसमें सरकार की ओर से, एक अध्याय पर्यावरण संरक्षण और हमारी भूमिका का भी रखा गया है। आधिकारिक रूप से पेड़ों की कटाई वर्जित है। तूफान में विस्थापित वृक्षों का पुनः रोपण वैज्ञानिक तरीके से किया जा रहा है। शहर के एक कोने में वन्यारण्य की संभावनाएं भी तलाशी जा रही है। यह जरूरी भी है क्योंकि प्रकृति की संरचना में मनुष्य, पशु, पक्षी, वन इत्यादि कारक एक दूसरे पर आश्रित हैं।

वन बादलों को अपनी ओर खींचते हैं और वन्य क्षेत्रों में अच्छी वर्षा कराते हैं। वृक्षों के जड़ें मिट्टी को जकड़े रखते हैं इस कारण धरती के जिन हिस्सों में वन पाए जाते हैं वहां भूमि क्षरण नहीं होता। यह ग्रीनहाउस गैस को अवशोषित करके

वातावरण संतुलित रखते हैं।

वन संरक्षण और पर्यावरण में संतुलन बनाए रखने का अर्थ/तात्पर्य वनों को विभिन्न कारकों द्वारा नष्ट होने से बचाना है। आबादी बढ़ने के साथ लोग वनों/जंगलों पर ज्यादा आश्रित हो रहे हैं, दूसरी ओर नगरीकरण और बस्ती बसाने के लिए पेड़ काटे जा रहे हैं। फलतः विशाल वन क्षेत्रफल घटता जा रहा है, वन बचाव के उपाय अपनाते हुए जंगलों के पेड़ों को निर्दयता से कटाव को रोककर तथा वृक्षारोपण के जरिये वन संपदा के क्षय को रोका जा सकता है और इको सिस्टम (Eco system) को कायम रखा जा सकता है।



सदियों से लेकर अब तक मानव धीरे-धीरे करके पर्यावरण का विनाश करने में लगा है। अगर हम वन जंगल, वन्य प्राणी, जल ऐसे ही नष्ट करते रहें तो वो दिन दूर नहीं जब शुद्ध वायु के लिए लोग तरसेंगे और मानव जीवन खतरे में आ जाएगा।

- सागरिका बोस

पुत्री - किरण बोस
राजभाषा अधिकारी

आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है,
जिसका एक-एक दल एक-एक प्रांतीय भाषा और उसकी संस्कृति है।
किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा ही नष्ट हो जाएगी

- रवींद्रनाथ ठाकुर

माँ वैष्णव देवी दर्शन यात्रा

राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत रचना

यात्रा का जीवन में अपना एक अलग महत्व होता है और यदि वो यात्रा रोमांचक एवं स्मरणीय हो तो वो यात्रा जीवन में एक अमिट छाप छोड़ जाती है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस दुनिया को प्रकृति ने बखूबी सजाया- संवारा है जो हर एक के दिल को छू लेता है। वैसे तो जीवन ही एक यात्रा है लेकिन हमें इस दुनिया के रंगमंच पर अपने किरदार को निभाते हुए कई यात्राएं करनी पड़ती हैं और उसमें से कुछ यात्राएं जीवन में यादगार बनकर रह जाती हैं और उन्हीं में से एक यात्रा है वैष्णव देवी दर्शन से जुड़ी यात्रा।

वैष्णव देवी दर्शन यात्रा वर्ष 2000 की है जब हम दो

जम्मूतवी ट्रेन की दो टिकट स्लीपर क्लास की बना ली। यात्रा के पहले दिन हमने अपना बैग पैक किया और बार-बार इस बात को ध्यान में रख कर कि कहीं कुछ जरूरत का सामान न छूट जाए। मेरी एक आदत हमेशा से रही है कि मैं यात्रा के दौरान कुछ जरूरी दवाईयाँ और प्राथमिक उपचार की चीजें साथ ले कर चलता हूँ। यात्रा के दिन हम दोनों दोस्त ट्रेन पकड़ने के लिए अपने- अपने घरों से निकालकर इच्छापुर रेलवे स्टेशन पहुंचे और वहाँ से लोकल ट्रेन पकड़ कर सियालदह स्टेशन के लिए रवाना हुए।

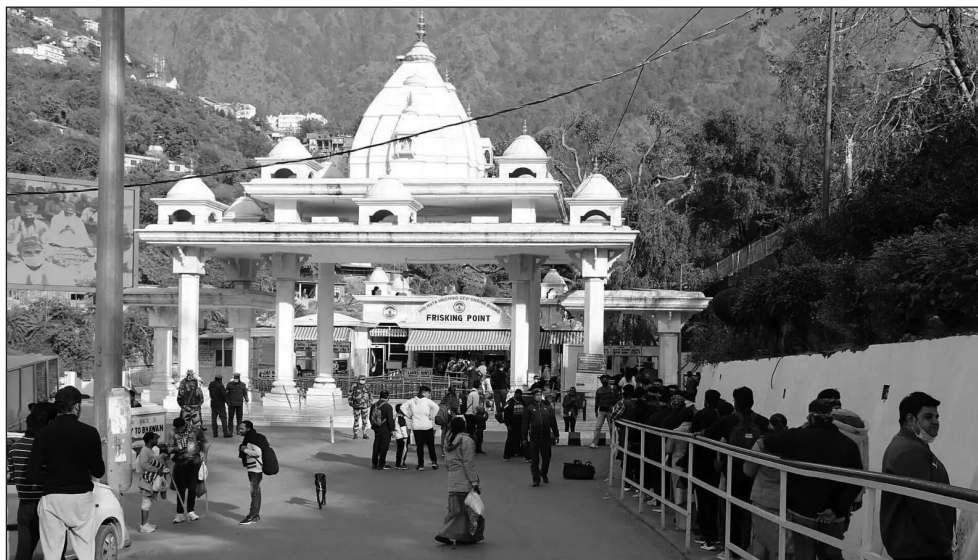


दोस्त माता देवी के दर्शन के बारे में सोच रहे थे और हमारा एक तीसरा मित्र जो हम दोनों से पहले नौकरी ज्वाइन कर चुका था और वह रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला में कार्यरत था। जब हम दोनों मित्र ने अपनी मंशा उसे बताई और उसकी इच्छा भी जननी चाही वह तुरंत तैयार हो गया। तय यह हुआ कि हम दोनों मित्र सियालदाह से जम्मूतवी ट्रेन पकड़ेंगे और हमारा तीसरा मित्र सीधे हमसे जम्मूतवी स्टेशन पर मिलेगा और वह हमसे पहले पहुँच कर ठहरने की सारी व्यवस्था कर रखेगा। हमने अक्टूबर माह में जाने का निर्णय किया और तय योजना के अनुसार हमने

गाड़ी तय समय पर सियालदह स्टेशन से खुली और हम दोनों मित्र मानो उन्मुक्त गगन में पक्षियों कि भांति पंख फैला लिए। हमारा सीट एक खिड़की के पास वाला था और एक बीच में था। बारी – बारी से हम दोनों मित्र रेलवे लाइनों के किनारे बसे गुजरते हुए गाँव, सड़कें, पेड़ों, झाड़ियों, मकानों, नदियों- नालों एवं पगांडियों पर चलते कृषकों एवं गौ समूह का झुंड मन को प्रफुल्लित कर रही थी। वैसे तो इससे पहले हम दूर की यात्रा सिर्फ नौकरी की परीक्षा के लिए किया

करते थे। धीरे- धीरे गोधूलि का समय आया और प्रकृति अपनी खूबसूरत छटा बिखेर रही थी। धीरे- धीरे शाम हो आई और अँधियारा छा गया। तब हमने निश्चय किया कि रात्रि का भोजन कर के सो जाएं। ट्रेन के डिब्बे में जब हम अपना बिस्तर लगा रहे थे कि सामने सीट में बैठे यात्री ने हमसे ऊपर सो जाने का आग्रह किया और नीचे वाली सीट उनकी पत्नी को जो कि थोड़ी बीमार एवं प्रौढ़ थी उनको देने को कहा और हमने पहले उन्हें देखा और उन्हें वो सीट खुशी- खुशी दे दी। सुबह जब हम सो कर उठे तो सुबह का नजारा देखकर ताजगी आ गई, तभी मेरी सीट

के पीछे वाली सीट से रोने की आवाज आने लगी, मुझसे रहा न गया और मैंने जा कर उनसे पूछा कि क्या बात है? तभी उस महिला ने सहमी आवाज में कहा कि मेरे बेटे को बहुत बुखार है और उनके पास कोई दवा नहीं है। मैंने उन्हें अपने थैले से पैरासिटामोल की गोली निकालकर उन्हें आधा गोली खिलाने को कहा। एक घंटे बाद उस आठ वर्ष के बच्चे का बुखार उतर गया था और वह खेल रहा था। मुझे बहुत खुशी हुई। इस छोटी यात्रा में रेल वाकई पूरे हिंदुस्तान को जोड़ देता है और मानो एक परिवार सा दिखने लगता है।



दो रातों की यात्रा के उपरांत हम सुबह-सुबह जम्मूतवी स्टेशन पहुँचें और हमारा तीसरा दोस्त वहाँ स्टेशन पर इंतजार करते मिला। हम तीनों वहाँ से थोड़ी दूर स्थित वैष्णव देवी धाम के डोरमेट्री में ठहरे और नहा-धो कर खाना खा कर आराम किए। शाम को हम सब जम्मू के आसपास घूमें। चूंकि जम्मू-काश्मीर उस समय आतंक से काफी प्रभावित था और हर जगह चौराहे पर सुरक्षा कर्मी तैनात मिलते थे। अगले दिन सुबह हम सभी वैष्णव देवी यात्रा के लिए निकाल पड़े। बस से पहले कटरा पहुँचें और वह थैला रखकर पैदल आगे की यात्रा के लिए रवाना हुए। थोड़ी दूर पर लंगर चल रहा था और हम सभी ने भोजन ग्रहण किया और आगे के लिए निकल गए। प्रकृति कि छटा बड़ी मनोहर थी और उस पर साथ चलने वालों के जयकारों का घोष उसे और मनोहर बना रहा था। ऊँचाई पर चढ़ते हुए कदम कुछ फासले तय कर चुके थे। बच्चे,

बूढ़े सभी में माँ के दर्शन का भरी उत्साह था। बीच रास्ते में गर्भगृह भी आया जो काफी संकरा था पर उससे भारी भरकम शरीर वाले भी पार कर ले रहे थे मानो अपने आप में एक करिश्मा हो। अंत में हम सभी वैष्णव देवी मंदिर पहुँच गए। हम नहा धो कर पूजा सामग्री लेकर माँ के दर्शन के लिए गए। माता का अदभुत दरबार था। दिव्यता झलक रही थी। मन बहुत प्रसन्न था और हमारी यात्रा अब तक सफल रही।

वापस लौटते हुए मन में असीम संतोष था। हम वापस कटरा लौटे और वहाँ से अपना थैला लिए और सीधे स्टेशन पहुँचे। हम ट्रेन पर सवार हो गए और हमारी वापसी की यात्रा शुरू हो गई। अगले दो दिनों बाद हमारी ट्रेन सियालदह स्टेशन पहुँची और यह यात्रा जीवन की एक स्मरणीय यात्रा बन गई।

– राजेश कुमार राम
म.प्र. के निजी सचिव/ ग्रेड-1
म.प्र. कार्यालय

भाषा मात्र परिधान नहीं, राष्ट्र का समग्र व्यक्तित्व हुआ करती है।
जिसे राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं, उसकी स्वतंत्रता का क्या मूल्य है।

– महादेवी वर्मा

हिमालय की वादियों में एक दिन

अपने जीवन में कई बार हम अपने पारिवारिक व अन्य दायित्वों के निर्वहन में इतने मग्न व लीन हो जाते हैं कि आस-पास की दुनिया से जैसे बेगाने से हो जाते हैं। हमारे पास तब इतना वक्त ही नहीं होता कि हम उन्हें जान या समझ सकें। ऐसे में हमारा भौतिक जीवन एक सीमित भौगोलिक दायरे में जैसे सिमटकर रह जाता है। किसी एक पल में ऐसा लगता है मानो दुनिया बस इतनी सी हो जो हमारे इर्द-गिर्द है। परंतु सच तो यही है कि हमारी लौकिक दुनिया बेहद खूबसूरत, दर्शनीय और



हमारी कल्पनाओं से कहीं बेहतर और आकर्षक भी है। कई बार हमारी स्वयं की प्रवृत्ति, हमारी आर्थिक स्थिति, असुरक्षा की भावना हमें अपने स्वरचित दायरे से निकलने की अनुमति नहीं देती जिससे हम कुदरत के कई नायाब उपहारों का दर्शन कर पाने से वंचित रह जाते हैं। पढ़ी हुई, सुनी हुई या कपोल-कल्पित बातें यथार्थ से कहीं परे होती हैं यह मैंने तब अनुभव किया जब मैंने यह यात्रा संपन्न की। बचपन के उन दिनों जब मैं गांव में रहता था, तब मुझे गांव के जंगल, गांव के पेड़-पौधे, गांव के झरने, गांव के पहाड़, गांव के जंगल, सब कुछ अदभुत और अद्वितीय लगते थे, मानो ये दुनिया के सबसे सुंदर, सबसे बेहतरीन और सबसे दर्शनीय चीजें हों। पर जैस-जैसे मेरी जिंदगी गांव से बाहर की ओर चली, दुनिया मेरी नजर में भी बड़ी होने लगी, मेरी

कल्पनाओं से कहीं अधिक बड़ी, कहीं अधिक विस्तारित।

जीवन सदैव गतिशील है। स्थिर रहना निर्जीवता, जड़ता, नीरसता और निष्क्रियता का प्रतिमान है। जो आगे नहीं बढ़ता, नए अनुभवों का स्वागत नहीं करता, वह अपनी जीवन की ऊर्जा खो बैठता है। कोलकाता में रेल सेवा के लगभग 22 वर्ष हो चुके हैं। पर चाहे इसे जीवन की व्यस्तता कह लें या निज की उदासीनता, कभी कोलकाता के निकटवर्ती पर्यटक स्थलों का भ्रमण करने का ख्याल पुरजोर पूर्वक कभी हुआ ही नहीं। दीघा, दार्जिलिंग, मुर्शिदाबाद, सुंदरवन, गंगासागर जैसे समीपवर्ती पर्यटन स्थल भी अबतक मुझसे अदेखे ही रहे थे। घर से कार्यालय और कार्यालय से घर के अतिरिक्त कभी सप्ताहांत में अपने गृह नगर का चक्कर लगा लेना ही जैसे अपना जीवनचक्र था। पर शायद इस बार कोई नया अनुभव प्रतीक्षारत था।

कार्यालय के किसी कार्य से पूर्वोत्तर की ओर जाने का कार्यक्रम बना। कार्य बहुत अधिक न था तो लौटते क्रम में मैंने न्यू जलपाईगुड़ी

सहित निकटवर्ती हिल स्टेशन दार्जिलिंग घूमने का कार्यक्रम भी तय कर डाला। पत्नी को भी दार्जिलिंग दर्शन की तीव्र उत्कंठा थी, तो साथ ले लिया। निर्धारित तिथि को हम गुवाहटी में अपने कार्यालय कार्य संपन्न कर वापसी के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस पर सवार हो गए। आत्मनिर्भर भारत की भावनानुकूल विकसित इस आधुनिकतम सेमी हाई स्पीड रेलगाड़ी के बाबत काफी कुछ सुन रखा था। परंतु गाड़ी में प्रवेश करने पर मेरी अपेक्षाएं ठगी सी रह गईं। शायद यथार्थ मेरी उम्मीदों से कहीं अधिक पीछे छूट गई थी। खैर इसकी जिस पहलू से मैं अप्रभावित हुए बिना न रह सका, वह था इसकी रफ्तार और समयपाबंदी। नियत समय पर हम अपने गंतव्य (जलपाईगुड़ी) पर थे। हल्की बूँदा-बांदी हो रही थी। ठहरने की व्यवस्था पहले

से ही प्रबंधित थी। तो हम सीधे ही वहीं के लिए चल पड़े।

दूसरे दिन दार्जिलिंग घूमने का कार्यक्रम तय था। गूगल जैसे ज्ञान के महासागर पर मैंने दार्जिलिंग की अच्छी खासी अनुसंधान कर ली थी और तब मुझे ऐसा कुछ भी विशेष नहीं लगा था जोकि मेरी जिज्ञासा को आमंत्रित कर सके। सिवाय इसके कि मैं एक ऐसे भौगोलिक स्थल का साक्षात्कार करने वाला था जिसे मैंने अपनी शिक्षा-दीक्षा के क्रम में पुस्तकों के पन्नों पर पढ़ रखा था और कल्पनाओं में गढ़ रखा था। मेरी उत्कंठा की हद शायद यहीं तक थी। वैसे तो मैं एक ऐसे प्रदेश से संबंध रखता हूँ जिसे कुदरत ने मुक्त हाथों से प्राकृतिक सौंदर्य के उपहारों से नवाजा है। पहाड़, पर्वत, नदियाँ, झरने, प्राकृति नजारे आदि मुझसे अनजाने व अनदेखे नहीं हैं। परंतु जिस कल्पना को मैं साकार होते देख पाने की लालसा में बेसब्र हुआ जाता था वो था हिमालय की गगनचुंबी उतुंग शिखरें। बर्फ की सफेद चादर में लिपटी हिमालय की हसीन वादियाँ। जहां तक दृष्टि पहुँच न सके उतनी गहराई तक नुकीले ढलान पर गिरती हजारों फीट की अनंत घाटियाँ। पर्वतों की ढलानों पर करीने से लगे चाय के बागान। ऊँचे पर्वत के किसी शिखर से बलखाती बहती पहाड़ी झरने। यही कुछेक कल्पनाएँ थीं जो मेरी कौतुहल को आमंत्रित कर रहे थे। स्कूली दिनों में पढ़े भूगोल के पन्नों से भूली-बिसरी यादें अचानक ताजी हो चली थीं। कल्पनाएं शायद साकार होने की राह पर थीं।

खैर, किराए के वाहन में सिल्लीगुड़ी से दार्जिलिंग की सफर शुरू हुई। सिल्लीगुड़ी से दार्जिलिंग की दूरी लगभग 65 किमी है। वैसे तो सिल्लीगुड़ी को दार्जिलिंग से जोड़ने वाला मार्ग राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 110 है लेकिन यह पूरा रास्ता हिल कार्ट रोड के नाम से जाना जाता है। बरसात का नमी भरा मौसम था। आकाश में बादल छाए थे। सिल्लीगुड़ी शहर से बाहर जाते हुए थोड़ी ही देर में सड़क के दोनों किनारों पर दूर-दूर तक हरे मैदान से फैले चाय के बागान नजर आने लगे। मैं थोड़ा विस्मित हुआ, यह देखकर कि ऐसी समतल जमीन पर भी चाय की खेती आसानी से की

जा सकती है। अबतक मेरी यही धारणा थी कि चाय की खेती केवल पहाड़ों के ढलानों पर ही संभव था। कुछ आधे घंटे के सफर के बाद पर्वतों की श्रृंखला दृष्टिगोचर होने लगी। पहाड़ों पर चढ़ाई शुरू होते ही घुमावदार रास्तों का सिलसिला आरंभ हो गया।

गाड़ी में पहाड़ों और वादियों में फिल्माए गए फिल्मों के मधुर संगीत बज रहे थे। थोड़ी ही देर बाद दार्जिलिंग हिमालयन टॉय ट्रेन की नन्ही-नन्ही पटरियाँ भी नजर आने लगीं। उन्हें देखकर मुझे परिणिता फिल्म के उस दृश्य का



सहज स्मरण हो आया जिसमें सैफ अली खान बतौर हीरो पहाड़ी धुन पर बनी 'राइलो मजा है रे राई मा.. गीत पर अभिनय करते नजर आते हैं। पर्वतों की चोटियाँ कुहासों व बादलों के आवरण में लिपटे थे। न तो उनकी ऊँचाईयों का आभास हो पा रहा था और न ही इनकी घाटियों की गहराई का। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए मौसम का मिजाज भी बदलता गया। कहीं एक पल को मौसम साफ होता तो दूसरे ही पल सफेद बादल के झुंड फिजाँ को अपने आगोश में लपेट लेते। सफेद बादलों से गिरती ओस की छोटी-छोटी बूंदें हमारे तन-मन को भिंगो रही थी, शायद कहीं भीतर तक हमें नम कर रही थी। मैं पहाड़ों की अदभुत ऊँचाईयों और घाटियों की अथाह गहराई देख बेहद अचंभित था। सर्पाकार सड़कें जहाँ एक ओर मन को हर्षित और उल्लासित कर रही थीं वहीं सैकड़ों फीट गहरी घाटियाँ मन को भयाक्रांत भी कर रही थीं। पहाड़ों

की ढलानें काफी तीखी थीं और इनकी चढ़ाई अत्यंत खड़ी या सीधी। इन पहाड़ों पर पैदल चढ़ पाने की कल्पना मात्र से भी मन सिहर उठा, हौसले पस्त हो गए मालूम होते थे। हिमालय की इस विशालकाय स्वरूप के दर्शन से इसके प्रति अबतक बनी मेरी समस्त परिकल्पनाएं, समस्त धारणाएं जैसे ध्वस्त हो गए। जल्द ही मुझे इस बात का आभास हो गया कि हिमालय की विकरालता को कल्पना में समेट पाना संभव नहीं है। इसके नतमस्तक चोटियों के समक्ष अपने गांव के पहाड़ एकदम बौने, टुच्चे और छोटे लगने लगे जो इसके आसपास कहीं भी नहीं टिक पा रहे थे। सचमुच, इसकी विकरालता को बयां कर पाना या किसी को समझा पाना आसान न था। इसके प्रत्यक्ष दर्शन से ही इसकी विकरालता का साक्षात्कार व अनुभव किया जा सकता है, ऐसा मुझे महसूस हुआ।

सड़कों के किनारे नन्हें-नन्हें स्तंभों पर टिके मकान मुझे आकर्षित करने के साथ बेहद भयभीत भी कर रहे थे। उनकी निर्माण शैली खतरनाक और डरावनी सी लग रही थी। प्रायः सभी मकानों पहाड़ों की तीखी ढलानों पर खंभों के सहारे टिकी थीं। दूर-दूर तक समतल भूखंड का जैसे कोई नामो निशान न था। ढलानों और ऊँचाईयों के सिवा कुछ भी नजर न आता था। भूस्खलन जैसे प्राकृतिक आपदा में उन मकानों की क्या स्थिति हो सकती है, उसकी कल्पना मात्र से ही मेरे रूह कांप उठते थे। सारे के सारे मकान ऐसे लग रहे थे मानों वे किसी वृक्ष की टहनियों पर टंगे हों।

अंततः दार्जिलिंग की अवस्थिति देखकर मेरी कल्पना मन अंग्रेजी साम्राज्य की याद दिला गई। मैं यह सोचने पर विवश हो गया कि अंग्रेज भी क्या ही साहसिक लोग हुआ करते थे। उस वक्त उपलब्ध इंजीनियरी के बूते लगभग 6907 फीट ऊँचे इस पहाड़ी शहर को बसाने में क्या ही दिक्कतें आई होंगी, मैं यह सोचना चाहता था। पहली बार देवदार के विशालकाय वृक्ष देखकर मुझे अपने गांव के सखुए बौने से जान पड़े। कल-कल करते झरते हुए पहाड़ी झरने के विहंगम दृश्य मन को लुभा रहे थे। पहाड़ी सौन्दर्य

अपने शबाब पर था। देवदार के ऊँचे पेड़ों को चूमते बादल मौसम को कुछ रोमांटिक सा बना रहे थे।

दार्जिलिंग दर्शन के नाम पर हमने घुम मोनस्ट्री, टॉय ट्रेन, चाय बागान, बताशिया लूप, माल रोड क्षेत्र का भ्रमण किया। हालांकि मौसम खराब होने की वजह से हम कंचनजंघा के दीदार करने से वंचित रह गए। खरीददारी के नाम पर पत्नी ने स्मृति स्वरूप कुछ गर्म कपड़े लिये। दार्जिलिंग की सड़कों पर गुजरते हुए ड्राइवर ने हमें सेंट पॉल स्कूल के दर्शन कराते हुए जानकारी दी कि इसी स्कूल में शहरूख अभिनीत फिल्म 'मैं हूँ न' और एक अन्य फिल्म **यारियां** के कुछ सीन फिल्माए गए थे। मन कुछ पल को फिल्मीमय हो उठा और वापस लौटकर मैंने सचमुच ही 'मैं हूँ न' फिल्म को दुबारा देख डाला, इस उम्मीद पर कि शायद दार्जिलिंग की खूबसूरत वादियाँ फिर से नजर आ जाएं, पर फिल्म में आशातीत दृश्य नहीं थे।

लौटने के क्रम में एक स्थान पर रूककर होटल में पहाड़ी भोजन व सब्जियों का स्वाद चखा। दूसरे दिन सुबह बागडोगरा एयरपोर्ट से कोलकाता के लिए उड़ान भरे। लगभग 40 मिनट की उड़ान के पश्चात हम कोलकाता में थे।

हमारा सफर समाप्त हो चुका था पर हिमालय की ऊँचाईयों पर बिताए वह एक दिन मेरी जिंदगी का एक बेहतरीन, रोमांचक और यादगार दिन रहा। जो दृश्य मेरी आँखों के सामने था उसे बस ख्वाब ही कहा जा सकता था, उसे शब्दों में बांधना आसान नहीं था, उस एहसास को सिर्फ महसूस ही किया जा सकता था। मैं खुली आँखों से एक अविस्मरणीय ख्वाब देख पा रहा था। पहाड़ों की रानी का अप्रितम सौंदर्य मेरी आँखों के सामने था। मैं इसे शब्दों में पिरोने से बचना चाहता हूँ इस भय से कि मेरे शब्द उनके सौंदर्य को सीमित न कर दे, बस उन्हें आत्मा की गहराई से इसे महसूस चाहता हूँ। आज मेरा रोम-रोम किसी अनजाने से अनुभव के स्पर्श से पुलकित हो उठा है।

– राजेश एक्का

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

जीवन की जीवनी

जीवन एक विचित्र सी घटना है। जीवन जीने की कला खुद में अनूठी है। मैं कभी-कभी सोचता हूँ बचपन से अब तक जीवन जी रहा हूँ फिर भी इसे नजदीक से समझ नहीं पाया हूँ। इसमें कितनी विचित्रता समाई है, इसके हजारों रंग हैं, लाखों मतलब हैं।

मैंने देखा है कितने लोग इस जीवन से ऊब जाते हैं, कितने लोग सौ साल तक तक जीना चाहते हैं। कितने बच्चे बचपन में ही जीवन खो देते हैं। कितने नौजवान, युवक एवं युवती जीवन के मोह से दूर मृत्यु को अपना लेते हैं। इस संबंध में मदर इंडिया फिल्म का एक गाना मुझे बहुत याद आता है-

“दुनिया में हम आए हैं तो जीना ही पड़ेगा।
जीवन है अगर ज़हर तो पीना ही पड़ेगा।”

यह तो मन की एक गति है। मन मारकर जीना, पर हर व्यक्ति तो जीना चाहता है, सुखी जीवन चाहता है। एक मुकम्मल जहां चाहता है। धर्म शास्त्र, नीति शास्त्र में जीवन जीने या यूँ कहें कि जीवन संबंधी अनेक बातों का उल्लेख है। इसे पढ़कर, समझकर, अपनाकर मनुष्य जीवन को सत्यम शिवम और सुंदरम बना सकता है।

जीवन का सीधा संपर्क भोग से है। जब से मनुष्य में मस्तिष्क का विकास होना आरंभ होता है मनुष्य सोचने समझने लगता है। मनुष्य मन में भोग की लिप्सा उत्पन्न होने लगती है, वह हर स्थिति में सुख भोगना चाहता है। प्रकाश में रहना चाहता है, एक सुंदर साफ-सुथरा आरामदायक घर चाहता है, स्वादिष्ट पौष्टिक भोजन चाहता है, अच्छा पहनावा चाहता है, हर विषय में अच्छी सुविधा चाहता है, ममता, प्रेम, सच्चाई चाहता है एवं सर्वोपरि सबसे ज्यादा जिसकी चाह रहती है वह है धन राशि की जिसे आज के समय में जीवन जीने के लिए प्रधान एवं मुख्य ध्येय के रूप में माना जाता है। धन है तो सब कुछ है, जीवन अब जल

नहीं जीवन अब धन है। धन जिसके पास है सुखी जीवन वही जी सकता है। अर्थात् जीवन से चाहत ओतप्रोत रूप से जुड़ा हुआ है।

जीवन और समय एक दूसरे के पूरक हैं। समय है तो जीवन है। जीवन और समय साथ-साथ चलते बदलते रहते हैं। समय ठीक तो जीवन भी ठीक। समय बिगड़ा तो जीवन संशय हो जाता है। इसलिए कहते हैं जीवन सही से जीना है तो समय को पहचानो समय का सदुपयोग करो।

जीवन का और एक मुख्य भाग है साथ या संगत। अर्थात् हम किसके साथ जीवन जी रहे हैं। किसके साथ उठ बैठ रहे हैं? हमारा परिवार कैसा है? माँ-पिताजी का रिश्ता कैसा है? जीवन साथी का साथ संबंध कितना गहरा है? बच्चों के साथ हमारा संबंध कैसा है? यह सब बातें जीवन जीने की राह में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। कहते हैं साथ भला तो जीवन जन्नत बन जाता है। साथ अगर गलत पड़ गया तो जीवन जहन्नम बन जाता है। इसलिए जीवन जीने की राह में हर कोई हर स्थिति में एक अच्छा, सच्चा, पक्का और एक सुंदर परिवार, साथी या दोस्त चाहता है।

जीवन और भगवान का संबंध भी बहुत प्रगाढ़ है। हम मानते हैं यह जीवन ईश्वर की देन है। वही जीवन देता है और वही जीवन ले भी लेता है। हम सब उसके हाथ की कठपुतली मात्र हैं। जीवन से मृत्यु तक एक यात्रा मात्र है। हमारा कर्म ही हमारे जीवन को निर्धारित एवं संचालित करते हैं। हम जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल हम इस जीवन में जीते जी भोगते हैं। कर्म पर हमारा अधिकार निश्चित है पर कर्मफल पर हमारा अधिकार नहीं है। इसलिए कहते हैं कि कर्म अच्छा तो जीवन अच्छा कर्म बुरा तो नरक के दर्शन यहीं पर हो जाएंगे।

जैसे किसी भी बड़े विषय को समझने के लिए उसे हम

भिन्न-भिन्न भागों में बाँट कर समझने की कोशिश करते हैं। ठीक उसी प्रकार से जीवन को भी कई भागों में जीव द्वारा बाँटा जाता है जैसे छात्र जीवन- इस जीवन में ही अनेक जीवन छुपे होते हैं। यह जीवन किसी का रंगीन तो किसी का फीका होता है। इस जीवन में कोई बहुत कुछ जान पाता है और यही वह जीवन है जिसमें लोग भटक जाते हैं।

इसके बाद आता है नौकरी या कर्म का जीवन इस जीवन में लोग आय को महत्व देते हुए जीवन को सुख समृद्धि से भर देना चाहते हैं। इस जीवन के कई मुख्य शाखा हैं जैसे भक्तिमय जीवन, भोगमय जीवन, गतिहीन जीवन, बेरोजगारी का जीवन, विवाहित जीवन, सेवानिवृत्ति का जीवन, बुढ़ापे का जीवन और फिर मृत्यु। इस जीवन में दर्द भी कई हैं प्रेम का दर्द, हार जाने का दर्द, प्रियजन से बिछुड़ जाने का दर्द, मृत्यु का दर्द, शारीरिक दर्द, मानसिक दर्द, सपने टूट जाने का दर्द, गरीबी का दर्द और भी कई दर्द हैं। दर्द में पड़कर व्यक्ति सोचता है “दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई काहे को दुनिया बनाई।” पर बुद्धिमान व्यक्ति रवीन्द्रनाथ की तरह सोचता है –

“आछे दुख्खों आछे मृत्यु, विरह दहन लागे,
तबुओ शांति तबू आनंद तबू अनंत जागे।”

परंतु हमेशा ध्यान रखें दुःख में, पीड़ा में, मृत्यु में जीवन उपदेशों को नहीं मानता है, वह उस समय बुद्धिमान नहीं सबसे कमजोर और निर्बुद्धि बन जाता है। जीवन ही बुद्धिमान रखता और बनाता है।

मैं कभी-कभी सोचता हूँ हमारे वेद निर्माता, शास्त्र पंडित लोग जीवन के प्रति कितने सकारात्मक सोच रखते थे। उन्होंने वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य सभी में जीवन को सर्वोपरि रखते हुए इनका निर्माण ऐसे तरीके से किया है कि जीवन को सुलभ बनाया जा सके। हमारे हर पर्व, पूजा, त्यौहार शरीर से, परिवार से, भोजन से, आनंद से जुड़ा हुआ है। हमारे संस्कार, हमारे रीति- रिवाज में भी जीवन को ही प्रमुखता दी जाती है। कहते हैं न, जान है तो जहान है।

मृत्यु बस एक दुखद घटना मात्र है। एक क्षणवादी कल्पना। किसी के मृत्यु के बाद ही हम उसको नवजीवन देने की ओर बढ़ते हैं। गीता में भी तो कहा गया है आत्मा का कभी नाश नहीं हो सकता है, बस आत्मा वस्त्र बदल लेती है अर्थात् हम कह सकते हैं यह एक ट्रांसमिशन मात्र है।

जीवन के प्रति हमारे मोह को इस बात से ही जाना जा सकता है कि मृत्यु के बाद भी हम जीवन की कल्पना करते हैं। मृत्यु लोक में हमारा जीवन कैसा होता है, यमराज, चित्रगुप्त, स्वर्ग नरक, जन्नत, कयामत के दिन, पाप की सजा पुण्य का मजा इसी कल्पना के उपज हैं। हाँ, यह बात जरूर है कि हम कभी-कभी सुनते हैं कि जीना यहाँ मरना यहाँ इसके सिवा जाना कहाँ मतलब स्वर्ग भी यहीं है, नरक भी यहीं है। मतलब भगवान जिन्हें माना जाता है कि स्वर्ग में ही रहते हैं। वह स्वर्ग हमसे ज्यादा दूर नहीं है अर्थात् स्वर्ग भी पृथ्वी पर ही है। हो सकता है दूसरे ग्रह में ऑक्सीजन की कमी के कारण भगवान को भी पृथ्वी पर ही रहना होता होगा अर्थात् उनका भी एक जीवन है। जो मेरे, आपके की तरह ही है। बस थोड़ा उच्च और अलग है। अगर ध्यान से देखा जाए तो भगवान की कल्पना भी तो हम हमारे जीवन की ही तरह करते आए हैं।

अतः जीवन की जीवनी अदभुत है। अपने आप में ही यह एक सीख है। जीवन जीना एक कला है। जीवन है तो सबकुछ है, तर्क है, सत्य है, अच्छाई है, बुराई है, स्वाद है, गंध है, रूप है, भोग है, झगड़ा है, रूठना-मनाना है, क्रोध है, पाप पुण्य है, खुशी है, दुख है, आँसू है, उत्सव है इसलिए जीवन अमूल्य है। इसे मन भर, जी भर एवं क्षण भर जी लेना ही बुद्धिमत्ता का कार्य है। पता नहीं कब किस जगह किस समय जीवन हमारे हाथ से रेत की तरह फिसल जाए।

– शांत्वनु नाथ

कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग

कांचीपुरम मन्दिरों का शहर

एक बार चेन्नई में रहते हुए मैंने एवं मेरी पत्नी ने कांचीपुरम जाने का प्लान बनाया। सुबह-सुबह तैयार होकर हम दोनों चेन्नई सेंट्रल स्टेशन पहुंचे। जहां से ट्रेन द्वारा हम लोग कांचीपुरम पहुंचे। हमें करीब 2 घंटे 30 मिनट का समय लगा। स्टेशन पहुँचकर हम लोगों ने एक टैक्सी की। शहर के सभी प्रमुख दर्शनीय स्थानों को देखा। इस प्राचीन दक्षिण भारतीय शहर को मन्दिर का शहर या दक्षिण का बनारस भी कहते हैं। तमिलनाडु राज्य की राजधानी चेन्नई से 72 कि.मी. दूर दक्षिण-पश्चिम में बसा यह शहर पौराणिक कथाओं खास कर महाभारत में भी उल्लेखित है। कांचीपुरम शब्द का तमिल अर्थ है ब्रम्हा का पूजन। वर्धराजा पेरूमल अर्थात् विष्णु का पूजन ब्रम्हा के द्वारा। यह शहर वेगावती एवं सहायक नदी पल्लार नदी के तट पर बसा है। पतंजली की संस्कृत व्याकरण की पुस्तकों में भी इसका उल्लेख पाया जाता है। महाकवि कालीदास ने भी इस शहर को अन्य शहरों की तुलना में उन्नत कहा है। तमिल साहित्य में इस शहर का उल्लेख बार-बार हुआ है। चीनी यात्री जेनेयांग ने भी अपने यात्रा वृत्तान्त में कांचीपुरम शहर के लोगों के विषय में लिखा है कि वे बड़े ज्ञानी, शान्ति प्रेमी एवं बहादुर थे।

मोक्षदायिनी सात नगरियों में अयोध्या, मथुरा, द्वारका, हरिद्वार, काशी और उज्जैन के साथ कांचीपुरम की भी गणना है। माना जाता है कि इस क्षेत्र में प्राचीन काल में ब्रह्माजी ने विष्णु के दर्शन के लिये तप किया था। ऐसा माना जाता है कि जो भी यहाँ जाता है, उसे आंतरिक आनंद के साथ-साथ मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। पुराणों में कहा गया है कि पुष्पेशु जाति, पुरुषेशु विष्णु, नारीशु रम्भा, नगरीशु कांची। कांचीपुरम शहर चोल राजाओं के शासन काल में राजधानी हुआ करता था। परन्तु इसकी उन्नति एवं महत्व पल्लवों के शासन काल में ज्यादा हुई है, विशेष कर पल्लव राजा महेन्द्रवर्मन एवं नरसिंहवर्मन के कार्यकाल में। इन्होंने चोल राजा पुलकेशीन द्वितीय के आक्रमणों को रोक और अपने साम्राज्य को बढ़ाया।

कांचीपुरम शहर को दो मुख्य भागों में बाँटा गया है। इसके दो भाग बड़ी कांची एवं छोटी कांची या विष्णुकांची में विष्णु के मंदिर अविस्थित हैं। उत्तरी तमिलनाडु में स्थित कांचीपुरम भारत के सात सबसे पवित्र शहरों में एक माना जाता है। हिन्दुओं का यह पवित्र तीर्थस्थल हजार मंदिरों के शहर के रूप में चर्चित है। यहाँ कई बड़े मन्दिर हैं, जैसे वरदराज पेरूमल मन्दिर भगवान विष्णु के लिये, भगवान शिव के पांच रूपों से एक को समर्पित एकाम्बरनाथ मन्दिर, कामाक्षी उम्मन मन्दिर, कुमारकोट्टम, कच्छपेश्वर मन्दिर, कैलाशनाथ मन्दिर, इत्यादि। आज भी कांचीपुरम और उसके आसपास 126 शानदार मंदिर देखे जा सकते हैं। हमारे देखे हुए प्रमुख मंदिर इस प्रकार हैं।

बैकुंठ पेरुमाल मंदिर - भगवान विष्णु को समर्पित इस मंदिर का निर्माण सातवीं शताब्दी में पल्लव राजा नंदीवर्मन पल्लवमल ने करवाया था। मंदिर में भगवान विष्णु को बैठे, खड़े और आराम करने मुद्रा में देखा जा सकता है। इस मंदिर में भगवान विष्णु के मुख की हंसी शायद मुझे सारी जिन्दगी याद रहेगी। ऐसी मनमोहक हंसी मैंने कहीं नहीं देखी। मंदिर की दीवारों में पल्लव और चालुक्यों के युद्धों के दृश्य बने हुए हैं। मंदिर में 1000 स्तंभों वाला एक विशाल हॉल भी है जो पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है। प्रत्येक स्तम्भ में नक्काशी से तस्वीर उकेरी गई है जो उत्तम कारीगरी की प्रतीक है।



कैलाशनाथ मंदिर - शहर के पश्चिम दिशा में स्थित यह मंदिर कांचीपुरम का सबसे प्राचीन और दक्षिण भारत के सबसे शानदार मंदिरों में एक है। इस मंदिर को आठवीं शताब्दी में पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय ने अपनी पत्नी की प्रार्थना पर बनवाया था। मंदिर के अग्रभाग का निर्माण राजा के पुत्र महेन्द्र वर्मन तृतीय ने करवाया था। मंदिर में देवी पार्वती और शिव की नृत्य प्रतियोगिता को दर्शाया गया है।



कामाक्षी अम्मन मंदिर - यह मंदिर देवी शक्ति के तीन सबसे पवित्र स्थानों में एक है। मदुरै और वाराणसी आन्य दो पवित्र स्थल हैं। 1.6 एकड़ में फैला यह मंदिर नगर के बीचो-बीच स्थित है। मंदिर को पल्लवों ने बनवाया था। बाद में इसका पुनरुद्धार 14वीं और 17वीं शताब्दी में करवाया गया।

यह मंदिर कांचीपुरम के शिवकांची में स्थित है। कामाक्षी देवी मंदिर देश की 51 शक्ति पीठों में से एक है। मंदिर में कामाक्षी देवी की आकर्षक प्रतिमा है। यह भी कहा जाता है कि कांची में कामाक्षी, मदुरै में मीनाक्षी और काशी में विशालाक्षी विराजमान हैं। मीनाक्षी और विशालाक्षी विवाहिता हैं। इष्टदेवी देवी कामाक्षी खड़ी मुद्रा में होने की बजाय बैठी हुई मुद्रा में हैं। देवी पद्मासन या योग मुद्रा में बैठी हैं और दक्षिण-पूर्व की ओर देख रही हैं।

मंदिर परिसर में गायत्री मंडपम भी है। मां कामाक्षी के भव्य मंदिर में भगवती पार्वती का श्रीविग्रह है, जिसे कामाक्षीदेवी या कामाकोटि भी कहते हैं। भारत के द्वादश प्रधान देवी-विग्रहों में से यह एक मंदिर है। इस मंदिर परिसर के अंदर चारदीवारी के चारों कोनों पर निर्माण कार्य किया गया है। एक कोने पर कमरे बने हैं तो दूसरे पर भोजनशाला, तीसरे पर हाथी स्टैंड और चौथे पर शिक्षण संस्थान बना है।

पास ही शंकराचार्य का पठ भी अविस्थित है। कहा जाता है कि कामाक्षी देवी मंदिर में आदि शंकराचार्य की काफी आस्था थी। उन्होंने ही सबसे पहले मंदिर के महत्व से लोगों परिचित कराया। परिसर में ही अन्नपूर्णा और शारदा देवी के मंदिर भी हैं। यह भी कहा जाता है कि देवी कामाक्षी के नेत्र इतने सुंदर हैं कि उन्हें कामाक्षी नाम दी गई। वास्तव में कामाक्षी में मात्र कमनीयता ही नहीं, वरन कुछ बीजाक्षरों का यांत्रिक महत्व भी है। यहां पर 'क' कार ब्रह्मा का, 'अ' कार विष्णु का और 'म' कार महेश्वर का प्रतीक है। इसीलिए कामाक्षी के तीन

नेत्र त्रिदेवों के प्रतिरूप हैं। सूर्य-चंद्र उनके प्रधान नेत्र हैं। अग्नि उनके भाल पर चिन्मय ज्योति से प्रज्वलित तृतीय नेत्र है। कामाक्षी में एक और सामंजस्य है 'क' सरस्वती का, 'मां' महालक्ष्मी का प्रतीक है। इस प्रकार कामाक्षी के नाम में सरस्वती तथा लक्ष्मी का युगल-भाव समाहित है। मंदिर खुलने का समय है सुबह 5.30 बजे और दोपहर 12 बजे बंद हो जाता है। फिर शाम को 4 बजे खुलता है और रात्रि 9 बजे बंद हो जाता है। ब्रह्मोत्सव और नवरात्रि मंदिर के खास त्योहार हैं।

बरदराज मंदिर -भगवान विष्णु को समर्पित इस मंदिर में उन्हें देवराजस्वामी के रूप में पूजा जाता है। मंदिर में 100 स्तम्भों वाला एक हॉल है जिसे विजयनगर के राजाओं ने बनवाया था। यह मंदिर उस काल के कारीगरों की कला का जीता-जागता उदाहरण है।

एकम्बार नाथ मंदिर - यह अति प्रचीन और भव्य मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर को पल्लवों ने बनवाया था। बाद में इसका पुर्ननिर्माण चोल और विजयनगर के राजाओं ने करवाया। 11 खंडों का यह मंदिर दक्षिण भारत के सबसे ऊंचे मंदिरों में एक है।



हमारे मोबाइल कैमरे से इस मंदिर की तस्वीर पूरी तरह से नहीं आ पा रही थी। मंदिर में बहुत आकर्षक मूर्तियाँ और हजारों शिवलिंग देखे जा सकते हैं। यहां एक ऐसा शिवलिंग भी है जिसमें एक साथ एक हजार शिवलिंग जुड़े हुए हैं। साथ ही यहां का 1000 पिलर का मंडप भी खासा लोकप्रिय है।

कहावत है कि इस मंदिर में अनेक बरसों से एक आम का पेड़ जो लगभग 3500-4000 वर्ष पुराना है। इस

पेड़ की हर शाखा पर अलग-अलग रंग के आम लगते हैं और इनका स्वाद भी आलग-आलग है। इस पेड़ के नीचे माँ पार्वती ने भगवान महादेव शिव की पूजा की, माता पार्वती शिव जी को प्राप्त करने के लिए। उसी आम के पेड़ के नीचे मिट्टी या बालू से ही एक शिवलिंग बना कर घोर तपस्या करनी शुरू कर दी। जब शिवजी ने ध्यानमग्न पार्वती जी को तपस्या करते हुए देखा तो महादेव ने माता पार्वती की परीक्षा लेने के उद्देश्य से अपनी जटा से गंगा जल को बहाना शुरू कर दिया। जल के तेज गति से पूजा में बाधा पड़ने लगी। माता पार्वती ने उस शिवलिंग जिसकी वह पूजा कर रही उसे गले लगा लिया जिससे शिव लिंग को कोई नुकसान न हो। भगवान शंकर जी यह सब देख कर बहुत प्रसन्न हुए और माता पार्वती को दर्शन दिया। शिव जी ने माता पार्वती से विवाह कर लिया। आज भी मंदिर के अंदर वह आम का पेड़ हरा भरा देखा जा सकता है। माता पार्वती और शिव जी को समर्पित यह मंदिर एकम्बारनाथ मंदिर है। यदि कोई मुझसे भारत के तीर्थ स्थानों के विषय में पूछे तो मैं कहूंगा कि मेरे देखे हुए सभी तीर्थों में कांचीपुरम उत्तम है। मंदिर के मनमोहक दर्शन के बाद हम लोगों ने एक होटल में खाया। हमलोग वहां के प्रसिद्ध कांचीपुरम सिल्क खरीदने के लिए लोकल मार्केट में गए। कुछ खरीदारी के बाद हम लोग फिर रात की गाड़ी से चेन्नई लौट आए।

त्रिदेवों और आदि शक्ति के मंदिरों का दर्शन अपने आप में एक बेहद रोमांचकारी अनुभव है।

— **दिलीप कुमार दास**
वरि. आशुलिपिक
भंडार विभाग

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

— महात्मा गांधी

अंतरमणि

मेरे मन के अंधेरे एकांत में
 प्रकाश की जो आकृति उभरती है,
 वह बनावटी नहीं।
 मेरे अंतर्मन से प्रकट होती है
 स्वाभाविक रूप से
 वह कोमल, शांत, विनम्र
 मेरे अंतर्मन में बसी
 एक सोलह वर्षीय बाला
 मेरे मन को उसने विनयी बना रखा है
 सभी मतवाद से दूर, सभी तर्क से परे
 नवीन स्पर्श सा मेरे अंतर्मन में
 कहीं एक कालजयी सी पैठी है।
 मैं उसे खो नहीं सकता,
 हमारा मिलन, विरह संभव हो नहीं सकता
 वह पराक्रमी भी बलशाली भी
 युद्ध का योद्धा, सभी वाक् में वक्ता
 मेरा कृष्ण और अर्जुन भी
 गलत पथ से सही पथ में लाती
 एक नशा सा, एक स्वप्न सा
 उसकी आँखों के पलकों में
 एक रंग भरी कूची सा मैं।
 मेरे मन की वो अंतरमणि।
 और मैं उसका अंतर्मन।

- सौमेन होड़
 पॉइंट्समैन, चाँदनी चौक

अंधेरी कोठरी

मोहन एक सीधा-सादा किसान था। वह बड़ा ही भोला-भाला शांतचित्त व्यक्ति था। वह खेती-गृहस्थी को अपने जीवन-यापन का साधन बना रखा था। वह अपने इस पेशे में मस्त और खुश था। हर किसी से हंस कर बातें करता था।

मोहन के जीवन में अचानक एक भूचाल आया। इस भूचाल में उसका सब कुछ बर्बाद हो गया। उसके गांव में एक व्यापारी आया। यद्यपि वह किसानों से अनाज खरीदने वाले साधारण व्यापारी के रूप में गांव में आया था पर सही मायने में वह ड्रग्स का व्यापारी थी। वह मोहन का भोला चेहरा देखकर उसे व्यापार और धन कमाने का झांसा देकर शहर ले गया और उसे ड्रग्स के धंधे की काली दुनिया में धकेल दिया। पैसा तो उसने खूब कमाया लेकिन काली कमाई के धंधे ने उसे अंधकूप में धकेल दिया। वह नशे का आदी हो गया। चौबीस घंटे नशे में चूर



मोहन को लगने लगा कि इसी में शांति है। मोहन चरस, कोकीन आदि के काले धंधे में इस तरह से लिप्त हो गया कि उसे यही दुनिया भाने लगी। उसे ड्रग्स के इस्तेमाल और उसके व्यवसाय की ऐसी लत लग गयी है कि वे कई पुश्तों के लिए धन कमाकर रख देना चाहता है। स्वयं शांत रहने वाला मोहन आधुनिक पेय पदार्थों में शांति खोजने लगा।

ऐसी एक मोहन की दशा नहीं बल्कि ऐसे अनेक

मोहन की है जो अंधी कमाई में इस तरह लिप्त हैं कि उन्हें ज्ञान, भक्ति और नीतिपरक बातें पसंद नहीं आती हैं। उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि उनका बेटा या अन्य परिवार का सदस्य उनके समान तेज-तर्रार होंगे। इसीलिए वे अधिक-से-अधिक धन कमाकर अपने परिवार वालों के लिए रख देना चाहते हैं। वे यह नहीं सोचते कि वे ऐसा करके अपने आश्रितों को कायर और कमजोर बनाकर उनके अंदर की प्रतिभा को समाप्त कर देते हैं। ऐसे लोगों के आश्रित बिना मेहनत के प्राप्त धन का उपयोग करते हैं और बिना परिश्रम के प्राप्त धन का गलत उपयोग करने लग जाते हैं। मुझे ऐसे धन कुबेरों से अनुरोध है कि कमाओ, खूब कमाओ लेकिन सही रास्ते से कमाओ और सही रास्ते में खर्च करो तथा आने वाली पीढ़ी को भी मेहनत करने और सही ढंग से धन का उपयोग करने के लिए प्रेरित करें। उन्हें भी खुली हवा में सांस लेने दें और अपनी प्रतिभा को दिखाने का अवसर दें।

कुछ अपवादों को छोड़ दें तो यह सच है कि मनुष्य स्वभाव से कमोवेश ईर्ष्यालू, लालची और स्वार्थी होते हैं। इसी स्वभाव के कारण कुछ लोग अपनी नियमित कमाई

से असंतुष्ट होकर लालचवश गलत रास्ते अपनाकर काली कमाई कर धन एकत्र करना प्रारंभ कर देते हैं। अंधी कमाई का लालच उन्हें ऐसा बना देता है कि वे अपना और पराया का रिश्ता भी भूल जाते हैं। उस समय धन, ऐश्वर्य एवं समृद्धि के अहंकार में उन्हें केवल अपनी लालच एवं अपना धंधा ही सर्वोपरि दिखता है। उनकी आंखों पर काले चश्मे की परत इस प्रकार चढ़ जाती है कि चाह कर भी प्रकाश की ओर वे देखने की हिम्मत नहीं कर पाते।

इसके उलट कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी मेहनत और ईमानदारी से धन कमाते हैं। ऐसे स्वाभिमानी मेहनती व्यक्ति आदरणीय और प्रेरणा योग्य होते हैं।

कर्म और आचरण के अनुसार ही मनुष्य तिरस्कार और आदर के योग्य होता है। इसीलिए ऐसे लोगों का नाम आज भी आदर से लिया जाता है जो ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह करते हैं और धन कमाते हैं। सभ्य समाज के मंच से उनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है।

– रंजीत कुमार सिन्हा
अवकाशप्राप्त मुख्य टंकक



किसान

एक गाँव में एक गरीब किसान रहता था। अपने जीवन यापन के लिए खेतों में बहुत मेहनत करता था। हर मौसम में उनको काम करना पड़ता था। कड़ी मेहनत के बाद जो अनाज तैयार होता, उसे बेच कर किसान अपने घर को चलाते हैं। देश में किसान को भगवान का दर्जा दिया जाता है। क्योंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है और हम दो वक्त की रोटी के लिए काफी मेहनत करते हैं। हमारा देश भारत जो कृषि पर आधारित देश माना जाता है क्योंकि यहाँ की अधिकतर जनसंख्या यानि कि 60% लोग खेती बाड़ी पर निर्भर हैं।

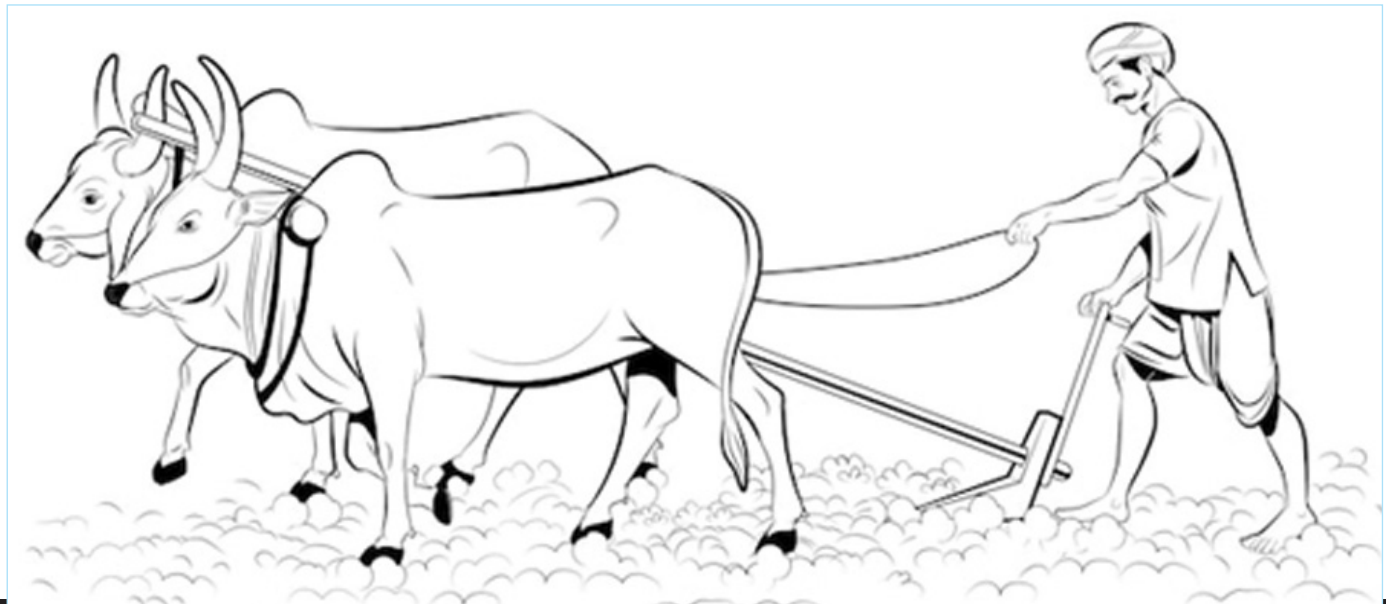
हमारे देश में किसानों को काफी सम्मान दिया जाता है। किसानों को अन्नपूर्णा भी कहा जाता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि किसान भारत की जान है। वह अपना पूरा जीवन देश की प्रजा के खाद्य उत्पादन में और देश के आर्थिक विकास में लगा देता है। भारत वासियों को हर किसान पर गर्व होना चाहिए। “जय जवान, जय किसान- , भारत की शान, भारत की जान।

हमारे पूर्व प्रधान मंत्री स्वं श्री लाल बहादुर शास्त्री ने जय जवान जय किसान का नारा दिया था क्योंकि वे ये जानते थे कि जवान और किसान ये दोनों ही देश की शक्ति के आधार स्तम्भ है। सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार

मुंशी प्रेमचंद जी की एक कहानी पूस की रात में किसान के जीवन चरित्र का सजीव वर्णन है। उन्होंने इस कहानी में यह बताया है कि कैसे एक किसान खेती करने की वजह से कर्ज में डूब जाता है, पूरी रात ठंड में बैठ कर अपनी फसल की निगरानी आवारा जानवरों से बचाने के लिए करता है फिर भी अपनी फसल नहीं बचा पाता है। मैंने ईश्वर को तो नहीं देखा पर पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि किसान है ये मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ, हमें किसानों द्वारा उगाये गए अन्न का आदर करना चाहिए और उन्हें बर्बाद होने से रोकने का प्रयास करना चाहिए शायद तभी हम उन्हें सच्चा सम्मान दे सकेंगे।

तकनीक में बढ़ोतरी होने के कारण आज खेती करना काफी सरल हो गया है। साथ-साथ किसानों के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएँ भी बनाई गई है जिसके चलते आज किसान का जीवन थोड़ा सरल हो गया है। हमारा व्यवस्था ऐसा है, जिसमें कभी बेईमानी नहीं की जाती है। मुझे इतनी मेहनत करने के बाद भी मेरे जीवन यापन के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है।

सरकार द्वारा किसानों के लिए किए गए प्रयास – पिछले कुछ सालों से सरकार को किसानों की परेशानियाँ समझ आ रही है और सरकार हर तरफ से किसानों की



सहायता देने का प्रयास कर रही है।

सरकार के द्वारा दिन-प्रतिदिन कृषि का ज्ञान किसानों के साथ साझा किया जाता है, जिससे हमारी कई समस्याएं दूर हो रही हैं। सरकार आज के समय में आर्थिक सहायता देकर भी किसानों के जीवन में एक उत्साह और जीने की चाह को बढ़ा रही है। सरकार किसानों के कर्ज को माफ कर के भी उनके ऊपर बड़ा एहसान कर रही है। आज के समय में सरकार के द्वारा किसानों के

जीवन को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है। किसान का पूरा जीवन प्रकृति पर निर्भर करता है। अगर बारिश अच्छी हो तो फसल अच्छी होती है लेकिन जब कुदरती आपदाएँ आती हैं तब सारी फसल खराब हो जाती है। किसानों के पूरी मेहनत पर पानी फिर जाता है और परिवार की हालत खराब हो जाती है। छोटी से छोटी खुशियों को भी पूरा करने के लिए किसान को काफी मेहनत करनी पड़ती है। लहलहाती फसलों को देख कर काफी सुकून मिलता है। एस लगता है मानो कोई त्यौहार हो। लेकिन आज किसान जीवन में काफी बदलाव नजर आ रहे हैं। कुछ वर्षों में सरकार के द्वारा कुछ ऐसे काम हुए जिसका सीधा लाभ किसानों को मिल रहा है। अब सरकार की तरफ से काफी सहायता मिलती है। सरकार अब खेतों के लिए बिजली और पानी देती है। किसानों को कृषि आधारित शिक्षा देती है। कृषि में भी अब टेक्नोलॉजी बढ़ने के कारण कम मेहनत में हम लोग ज्यादा काम कर सकते हैं, जिससे हमारा जीवन स्तर ऊँचा हो गया है। जीवन स्तर बदलने के बावजूद भी बढ़ती महंगाई के कारण आज भी किसान परिवार को



रोटी भी बड़ी मुश्किल से मिलती है। बीज की कीमतें दिन पर दिन बढ़ रही हैं जिसके कारण अच्छी गुणवत्ता के खाद और बीज खरीदने में किसानों के पसीने छूट जाते हैं।

भारत के विकास और आर्थिक उत्थान के लिए किसी भी योजना का सबसे महत्वपूर्ण कारक एक भूखे, असंतुष्ट लोगों को एक खुशहाल सुव्यवस्थित व्यक्ति में बदलना है। भोजन या तो आयात द्वारा या घर पर उत्पादन द्वारा हो सकता है।

वैज्ञानिकों के पास अन्य विधियाँ हैं। रसायनज्ञ, जीव विज्ञानी, इंजीनियर और यहां तक कि भौतिक वैज्ञानिक की विज्ञान को बड़े पैमाने पर कृषि उत्पादन में लागू करने के लिए एक महान भूमिका निभाई है। कृषक की वजह से घर पर हम भोजन प्राप्त कर पा रहे हैं। आज भारत देश आत्मनिर्भर बनाने की राह पर चल रहा है। पिछले डेढ़ दशक में अलग-अलग जलवायु और कठिन स्थितियों में विज्ञान और तकनीक जैसी प्रणाली ने कृषि करने का तरीका बदल दिया है।

किसानों को प्रति एकड़ फसलों की अधिक उपज

सुनिश्चित करने के लिए और मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने के लिए पहला कदम उठाया गया है। पुराने किसानों को गोबर जैसी आसानी से उपलब्ध खाद पर भरोसा था। किसानों को उचित मात्रा में फर्टिलाइजर्स और पेस्टिसाइड्स का उपयोग करना चाहिए। सटीक मात्रा में इसका उपयोग करने से फसलों की उपज अधिक होती है। किसानों को सिखाया जाना चाहिए कि रासायनिक उर्वरक भूमि की उत्पादकता को एक हद तक कम कर सकते हैं। अत्यधिक फर्टिलाइजर्स का उपयोग भूमि की उपजाऊ शक्ति को कम कर देता है। किसानों का अलग कदम बीज की गुणवत्ता में सुधार करना है। अच्छे बीजों की आपूर्ति अब तक की सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। प्लांट ब्रीडिंग एक महत्वपूर्ण कला है यह एक विशिष्ट विज्ञान है जिसे जानना किसानों के लिए जरूरी है। वैज्ञानिक नयी टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर रहे हैं ताकि किसान अपने स्थानीय वातावरण में आवश्यक जरूरतों को पूरा कर सकें। कृषि में विज्ञान की कई भूमिकाएँ हैं जैसे: उर्वरक, ट्रैक्टर, कीटनाशकों, ड्रिप इरिगेशन यानि सिंचाई, पानी पंपिंग, खाद संरक्षण।

कृषि में विज्ञान का एक बहुत बड़ा योगदान रहा है जिसे वर्णन करना संभव नहीं है। इस प्रकार विज्ञान को कृषि के क्षेत्र में और अधिक मूल्यवान बनाया जा सकता है। पूरे देश में नए कृषि संबंधित रिसर्च खोले जाने चाहिए। कृषि विश्व विद्यालयों की नींव एक अच्छी शुरुआत की गई है। विश्व विद्यालयों से अनुसंधान विशेषज्ञ हमारे बड़े देश के अन्य हिस्सों में फैल जाएँगे और कृषि से जुड़े

नए आधुनिक तकनीक के प्रयोग के बारे में कृषकों को बताएँगे। यह एक सुखद संकेत है और गर्व की बात है कि आज भारत में पर्याप्त भोजन है। भारत की छानबीन योजना के कारण अब एक वर्ष में 20 मिलियन टन खाद्य फसलों का उत्पादन होता है। भारत अब खाद्य निर्यात की स्थिति तक पहुँच गया है। समाज में किसान का स्थान गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री ने हमें देश की आत्मा का मान दिया था लेकिन समाज में आज भी किसानों की गिनती गरीबों में की जाती है। व्यापारी लोग किसानों से अनाज कम दामों में लेकर उसे बाजार में ज्यादा दामों में बेचते हैं और ढेर सारा मुनाफा कमाते हैं। लेकिन इस मामले में अभी तक सरकार द्वारा कोई कदम नहीं उठाया गया है। किसान जिंदगी सिर्फ कर्ज में डूबी होती है। आज भी लोग किसानों को अनपढ़ और गंवार समझते हैं। आज हर साल कर्ज में डूबे कई किसान भाई आत्महत्या करते हैं लेकिन समाज पर इन सभी घटनाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए हम कह सकते हैं कि किसान भारत कि जान है वह अपना पूर्ण जीवन देश की प्रजा के खाद्य उत्पादन में और देश के आर्थिक विकास में लगा देता है। भारतवासियों को हर किसान पर गर्व होना चाहिए 'जय जवान जय किसान भारत की शान भारत की जान'

– पेड्डा ममता राव
सामान्य सहायक
चिकित्सा विभाग

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है
जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक
भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है

– मैथिलीशरण गुप्त

मेट्रो चेतना

चंद्रमा पर मेरा भारत

चंद्रमा की बात दिमाग में चलने से मुझे व्यक्तिगत रूप से महेंद्र कपूर के ऐतिहासिक गाने का एक लाइन "जब जीरो दिया मेरे भारत ने" हमेशा याद आता है, मानो ये शब्द मेरे दिमाग में चुंबक की भांति चिपक गए हों।

मेरा भारत हर पल इतिहास रचता है और ऐसा आगे भी होता रहेगा। हर क्षेत्र में इसकी उपलब्धियां आसमान छू रही हैं और पूरे संसार में मेरे देश ने अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया है, बस कुछ ऐसा ही हुआ जब हमने चाँद को सफलतापूर्वक छू लिया। मेरे भारत ने फिर से एक बार इतिहास रचा और अपना नाम सुनहरे पन्ने पर दर्ज किया। हम लोग एक कहावत भी सुने हैं-

"लोहा जितना तपता है,
उतना ही ताकत भरता है"

बड़ा से बड़ा काम करने के लिए बहुत समय लगता है और हमारे वैज्ञानिकों की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। वैज्ञानिकों की कोशिश सन् 1962 में आरंभ हुई। विक्रम सारा भाई और होमी जैसे अनेक वैज्ञानिकों ने अपने दूरदर्शी प्रतिभा के योगदान द्वारा सफर शुरू किए और आगे भी बढ़े। उस समय भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी उनके प्रोत्साहन में कोई कमी नहीं की। वे भी हर समय सभी वैज्ञानिकों को बढ़-चढ़ कर मदद किया करते थे।

अन्तरिक्ष में हमारे कारनामों के लिए पूरे संसार ने तारीफों के पुल बांधे हैं। भारत के प्रथम अन्तरिक्ष यात्री 'श्री राकेश शर्मा' किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। परंतु पश्चिमी देशों के मुकाबले हम चंद्रमा के संदर्भ में थोड़ा पीछे थे लेकिन लम्बे समय तक नहीं रहे क्योंकि हम निरंतर कुछ कर दिखाने के प्रयास में लगे हुये थे। बस उसी निरंतर प्रयास का फल था कि हमारे वैज्ञानिकों ने सन् 2008 का प्रथम चंद्रयान 22 अक्टूबर 2008 को सतीश धवन अन्तरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया। उनके उस प्रयास ने पूरे विश्व को यह बता दिया था कि चाँद कि सतह

पर जल के व्यूहाणु उपलब्ध हैं। पर लगभग एक वर्ष बाद कुछ खराबी के चलते उस मिशन को वही समाप्त कारण पड़ा, लेकिन भारत ने अपना काम वही समाप्त नहीं होने दिया फिर से सभी वैज्ञानिक निरंतर प्रयास में लगे रहें। कुछ समय के फलस्वरूप सन् 2019 में चंद्रयान-2 लॉन्च किया गया। चंद्रयान-2 में ओर्बिटर के साथ इसरो ने लैंडर मॉड्यूल के हिस्से के रूप में लैंडर विक्रम और रावर प्रज्ञान को भी भेजा था। चंद्रयान-2 का लैंडर चंद्रमा पर पहुँच तो गया था लेकिन कुछ समय बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया था





लेकिन उसका ऑर्बिटर लगभग चार वर्षों से चंद्रमा की परिक्रमा कर रहा था। चंद्रयान-2 में तकनीकी खराबी के कारण उस मिशन को वही समाप्त करना पड़ा। मंजिल के इतने करीब पहुँच कर मिशन में असफल होने के कारण वैज्ञानिकों में निराशा तो थी पर कहते हैं न- 'जिनके होते हैं हौसले बुलंद, वो आसमान छू सकते हैं'। भले चंद्रयान-2 में सफलता हाथ नहीं लगी थी मगर वैज्ञानिकों के हौसले में कोई कमी नहीं थी। कुछ समय के बाद बहुत सोच-विचार कर सभी वैज्ञानिकों ने फिर चंद्रयान-3 का निर्माण किए। चंद्रयान-3 14 जुलाई 2023 को लॉन्च किया गया जो चाँद के दक्षिणी ध्रुव को बिना किसी रुकावट छूने वाली थी। 23 अगस्त को शाम 6 बजे यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंड हुआ और विश्व में ऐसा करने वाला भारत प्रथम देश बना। चंद्रयान-3 चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा कर लैंडर रोवर को तस्वीरें एवं अन्य तथ्य प्रदान कर रही थीं और रोवर का काम था उन तथ्यों को इसरो तक पहुंचाना जो रोवर ने सफलतापूर्वक किया। चाँद के

दक्षिणी ध्रुव पर वैज्ञानिकों ने इतिहास रच दिया और भारत को एक नई आशा की किरण दिखाई। आज हमारा तिरंगा चाँद पर भी दिखाई दे रहा है। भारत माता आज फिर से मुस्कुरा रही है।

पूरे देश में खुशी का माहौल छाया हुआ था। चाँद पर हमारे तिरंगा की लहर गूंज रही थी। भारत के वैज्ञानिकों का लोहा पूरी दुनिया मान चुकी है लेकिन हमे यहाँ रुकना नहीं है और हम रुकेंगे भी नहीं।

“झण्डा ऊंचा रहे हमारा”

“जय हिन्द”

“ उन्हें था गुमान हमारी उड़ान में कहाँ दम है, और हमें था भरोसा के आगे चाँद भी थोड़ा कम है”।

– राजा राम महतो
वरिष्ठ आशुलिपिक
चिकित्सा विभाग

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार के द्वारा
एकता स्थापित करने वाले लोग सच्चे भारतबंधु हैं।

– महर्षि अरविंद

मेट्रो रेलवे में जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन

मेट्रो रेल प्रशासन की ओर से दिनांक 17.11.2023 को स्वतंत्रता सेनानी धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस मनाया मनाया गया। इस अवसर पर उनके सम्मान में मेट्रो रेल भवन में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने दीप जलाकर एवं माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।



‘कमर दर्द’ विषय पर राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी

राजभाषा विभाग द्वारा एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य विषय ‘कमर दर्द : कारण एवं निदान’ पर राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के अध्यक्ष के रूप में महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी उपस्थित थे। प्रधान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अमिताभ दत्ता ने संगोष्ठी की विषयवस्तु पर एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया तत्पश्चात भौतिक चिकित्सक श्री सुमित कुमार ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से ‘कमर दर्द’ के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा स्वास्थ्य संबंधी कई महत्वपूर्ण जानकारियां साझा की जो श्रोताओं के लिए काफी ज्ञानवर्द्धक रही।

मेट्रो रेलवे ने मनाया संविधान दिवस

24.11.2023 को मेट्रो रेलवे में संविधान दिवस मनाया गया। महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने मेट्रो रेल भवन में अधिकारियों और कर्मचारियों को संविधान में निहित प्रस्तावना की शपथ दिलाई। मेट्रो अधिकारियों और कर्मचारियों ने भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को बनाए रखने और उसकी रक्षा करने की कसम खाई।



मेट्रो कर्मियों के परिवार की काउंसलिंग

एक अनूठी पहल के तहत दिनांक 09.07.2023 को नोआपाड़ा स्थित प्रशिक्षण संस्थान में मेट्रो मोटरमैन के परिवार के सदस्यों के लिए परामर्श सत्र का आयोजन किया गया ताकि उन्हें मेट्रो की कार्य परिस्थितियों के बारे में जागरूक किया जा सके। इस दौरान मोटरमैन की पत्नियों को सिमुलेशन कक्ष का दर्शन कराया गया और उन्हें यह जानकारी दी गई कि कैसे उनके मोटरमैन पति बड़ी ज़िम्मेदारियों और सतर्कता के साथ यात्रियों से भरी मेट्रो रेल को भूमिगत सुरंगों और वायाडक्ट में प्रतिदिन चलाते हैं। उनसे विशेष अनुरोध किया गया कि वे मोटरमैन को उचित, पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण आराम प्रदान करने में सहायता करें जो कि ड्यूटी में शामिल होने से पहले उनके लिए जरूरी है। उनसे यह भी अनुरोध किया गया कि वे उन्हें फिट रखने के लिए उचित और स्वच्छ आहार दें और उन्हें स्वस्थ जीवन शैली जीने में मदद करें।



मेट्रो रेलवे को अखिल भारतीय रेलवे शतरंज चैंपियनशिप में कांस्य पदक

मेट्रो रेलवे की शतरंज टीम को 02.07.2023 से 08.07.2023 तक रेलवे स्टेडियम, जबलपुर, मध्य प्रदेश में आयोजित अखिल भारतीय रेल शतरंज चैंपियनशिप, 2023 में कांस्य पदक प्राप्त हुआ। इस टूर्नामेंट में भारतीय रेलवे की कुल 13 क्षेत्रीय टीमों ने भाग लिया।

मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने शतरंज टीम में शामिल खिलाड़ी श्री जॉयदीप दत्ता और सोमक पालित सहित ग्रैंडमास्टर सप्तर्षि राय चौधरी और सायंतन दास को उनके अच्छे प्रदर्शन के लिए बधाई दी।



मेट्रो की महिला टेबल टेनिस टीम को कांस्य पदक



मेट्रो रेलवे की महिला टेबल-टेनिस टीम ने 7 अगस्त से 11 अगस्त 2023 तक मालेगांव, गुवाहाटी में आयोजित 69वीं अखिल भारतीय रेलवे टेबल-टेनिस चैंपियनशिप, 2023-24 में कांस्य पदक हासिल किया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने इस टूर्नामेंट में शामिल महिला टेबल-टेनिस टीम के सदस्य श्रेया घोष, अनुश्री हाजरा, रूपसा भट्टाचार्य, मौमिता दत्ता और पोयमंती बैस्या को उनके प्रदर्शन के लिए बधाई दी।

अंतर-संस्थागत टेबल टेनिस चैंपियनशिप में मेट्रो रेलवे को एक स्वर्ण पदक

16 से 22 अगस्त 2023 तक विशाखापत्तनम में आयोजित 50वीं अखिल भारतीय अंतर-संस्थागत टेबल टेनिस चैंपियनशिप में मेट्रो की महिला खिलाड़ी सुश्री मौमिता दत्ता ने स्वर्ण पदक जीतकर मेट्रो रेलवे के साथ-साथ भारतीय रेल परिवार को गौरवान्वित किया है। महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने इस टूर्नामेंट में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें बधाई दी।



नोआपाड़ा कारशेड में वृक्षारोपण कार्यक्रम

मेट्रो रेलवे महिला कल्याण संगठन (MRWWO) द्वारा 17 अगस्त 2023 को नोआपाड़ा कारशेड में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। मेट्रो रेलवे महिला कल्याण संगठन (एमआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ) की अध्यक्ष श्रीमती पी श्रीलता ने पौधा लगाकर इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अभियान के दौरान कुल 10 (दस) फलदार पौधे लगाये गये।

मेट्रो रेलवे, कोलकाता में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

मेट्रो रेलवे, कोलकाता में 30 अक्टूबर से 5 नवंबर, 2023 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी और विधि का शासन बनाए रखने के लिए दिनांक 30.10.2023 को मेट्रो रेल भवन में महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने मेट्रो रेल में मेट्रो रेल के अधिकारियों और कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई। ज्ञात हो कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 का विषय "भ्रष्टाचार को ना कहें; राष्ट्र के लिए प्रतिबद्ध" है।



मेट्रो रेलवे ने मनाया 'राष्ट्रीय एकता दिवस'

मेट्रो रेलवे, कोलकाता में सरदार वल्लभभाई पटेल की 148वीं जयंती के अवसर पर 31.10.2023 राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने मेट्रो रेल भवन में मेट्रो रेलवे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलाई। इस कार्यक्रम के हिस्से के रूप में 'रन फॉर यूनिटी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उत्तर-दक्षिण मेट्रो (ब्लू लाइन) की स्टील थर्ड रेल के स्थान पर एल्युमीनियम थर्ड रेल की व्यवस्था

उत्तर-दक्षिण मेट्रो (ब्लू लाइन) में लगे स्टील निर्मित विद्युत संचालक तीसरी पटरी के स्थान पर अब एल्युमीनियम निर्मित तीसरी पटरी लगाई जा रही है। इस परिवर्तन से कर्षण ऊर्जा में 84% की बचत सुनिश्चित की जा सकेगी। इस प्रतिस्थापन कार्य को दो साल में पूरा करने का लक्ष्य है। इस प्रकार की एल्युमीनियम निर्मित तीसरी पटरी ईस्ट-वेस्ट मेट्रो (ग्रीन लाइन), पर्पल लाइन के जोका- तरताला खंड में पहले ही स्थापित की जा चुकी है।

मेट्रो में राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड का अभ्यास

दिनांक 24.07.2023 को नोआपाड़ा मेट्रो स्टेशन पर राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड द्वारा मॉक ड्रिल किया गया। मेट्रो परिसर में किसी प्रकार की रासायनिक, आतंकवादी या अन्य हमले होने की स्थिति में इससे निपटने के तौर तरीकों का अभ्यास किया गया।

मेट्रो रेलवे में 'विभाजन त्रासदी स्मृति दिवस' का आयोजन

आजादी के समय देश विभाजन से प्रभावित लोगों की पीड़ाओं की स्मृति में 14 अगस्त 2023 को मेट्रो रेलवे के नेताजी भवन स्टेशन पर 'विभाजन त्रासदी स्मृति दिवस' का आयोजन किया गया। भारतीय राजनीतिज्ञ, बैरिस्टर और शिक्षाविद् डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के पोते श्री रवि प्रसाद मुखर्जी ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

15वीं अंतर्राष्ट्रीय रेलवे उपकरण प्रदर्शनी (आईआरईई) में मेट्रो रेलवे, कोलकाता की भागीदारी

12 से 14 अक्टूबर, 2023 तक नई दिल्ली में आयोजित 15वीं अंतर्राष्ट्रीय रेलवे उपकरण प्रदर्शनी (आईआरईई) में मेट्रो रेलवे ने भागीदारी करते हुए अपने स्टॉल में कैस्पेट कंट्रोलर, हाई स्पीड सर्किट ब्रेकर को प्रदर्शन किया। कोलकाता मेट्रो के नेटवर्क मॉडल सहित ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर के अंडरवाटर कंस्ट्रक्शन मॉडल ने मेट्रो स्टॉल में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों को आकर्षित किया है।

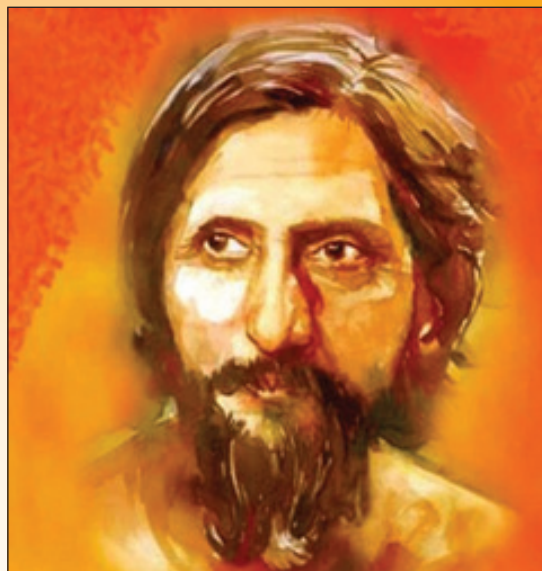
हिन्दी के हस्ताक्षर

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। उन्होंने कई कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेष रूप से कविता के कारण ही है। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में हुआ था। निराला की शिक्षा हाई स्कूल तक हुई। बाद में उन्होंने हिन्दी संस्कृत और बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया।

अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिन्दी में मुक्तछन्द के प्रवर्तक भी माने जाते हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है चित्रण-कौशल। निराला के प्रयोगों में एक विशेष प्रकार के साहस और सजगता के दर्शन होते हैं। निराला के काव्य भाषा में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है।



स्नेह-निर्झर बह गया है

स्नेह-निर्झर बह गया है।
 रेत ज्यों तन रह गया है।
 आम की यह डाल जो सूखी दिखी,
 कह रही है—“अब यहाँ पिक या शिखी
 नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
 नहीं जिसका अर्थ—
 जीवन दह गया है।”
 “दिए हैं मैंने जगत को फूल-फल,
 किया है अपनी प्रभा से चकित-चल;
 पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल—
 ठाट जीवन का वही
 जो ढह गया है।”
 अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,
 श्याम तृण पर बैठने को, निरुपमा।
 बह रही है हृदय पर केवल अमा;
 मैं अलक्षित हूँ, यही
 कवि कह गया है।

नाम	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
जन्म	21 फरवरी, 1899 पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिला में
मृत्यु	15 अक्टूबर, 1961 इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
काव्यसंग्रह	अनामिका, परिमल, गीतिका, अनामिका (द्वितीय), तुलसीदास, कुरुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत कुंज, सांध्य काकली, अपरा (संचयन)
उपन्यास	अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामे (अपूर्ण), चमेली (अपूर्ण), इन्दलेखा, तकनीकी
कहानी संग्रह	लिली, सखी सुकुल की बीवी, चतुरी चमार, देवी
रचना-समग्र	निराला रचनावली (संपादक- नन्दकिशोर नवल; राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित।)



कंकणा विश्वास
पुत्री - गोलक चन्द्र विश्वास



पेड्डा राजेश्वर राव
पुत्र - पेड्डा ममता राव



प्रियंका कनौजिया
पुत्री - शिवलाल कनौजिया



दिवेन्दु दास
पुत्र - देवांसु दास

-:राजभाषा गतिविधियां :-



आधार वर्ष 2022 के दौरान राजभाषा में सराहनीय कार्य हेतु महाप्रबंधक कार्यालय को चल शील्ड एवं नकद सामूहिक पुरस्कार



दिनांक 23.11.2023 को आयोजित राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में संबोधित करते महाप्रबंधक महोदय



राजभाषा पखवाड़ा- 2023 के दौरान अधिकारियों के लिए आयोजित प्रश्नमंच प्रतियोगिता



राजभाषा पखवाड़ा- 2023 के दौरान कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रश्नमंच प्रतियोगिता



राजभाषा पखवाड़ा- 2023 के दौरान अधिकारियों के लिए आयोजित हिंदी डिक्टेशन प्रतियोगिता



राजभाषा पखवाड़ा- 2023 के दौरान कर्मचारियों के लिए आयोजित 'चित्र देखें - कहानी लिखें' प्रतियोगिता



राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर मेट्रो रेल कर्मियों द्वारा मंचित नाटक 'हनुआ का बेटा'

